ISSN2393-8838

Date of Publishing 19th June Vol. No.30 Issue No.6

JUNE 2019

Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

''ज़माने की क़सम, बेशक इन्सान सरतासर (मुकम्मल तौर पर) घाटे में है, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अमल किए और जिन्होंने आपस में हक़ की वसिय्यत की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की'' (सूरे अस्र आयत न0 1—3)

1

यह अल्लाह की कारीगरी है

नौशाद अहमद

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: ''फिर उस दिन तुम से ज़रूर नेमतों का सवाल होगा''

दुनिया की कुछ नेमतें ऐसी हैं जो मेहनत करके हासिल की जाती हैं और कुछ नेमतें ऐसी हैं जिनको अल्लाह ने स्वयं उसके वजूद में रख दी हैं। मिसाल के तौर पर आंख कान, दिल दिमाग वगैरह।

यह दुनिया इन्सान के लिये आज़माइश की जगह है यहाँ के कर्मों से इन्सान के बारे में आखिरत में यह तय होगा कि वह आख़िरत में सफल होगा या असफल होगा।

इस संसार का एक एक पल बड़ा क़ीमती है, इसलिये हमारा वक़्त आज़माइश से कामयाबी के साथ गुज़र जाने में ख़र्च होना चाहिये जो हमारे लिये आख़िरत में सफलता का माध्यम बने।

कुरआन में अल्लाह तआला ने वक़्त की अहमियत को उजागर करने के लिये ज़माने की क़सम खाई है। कुरआन के सूरे अस्र का अर्थ है।

''ज़माने की क़सम, बेशक इन्सान सरतासर (मुकम्मल तौर पर) घाटे में है, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अमल किए और जिन्होंने आपस में हक़ की वसिय्यत की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की'' (सूरे अस्र आयत न0 1–3)

इस आयत में ज़माने का अर्थ यह है कि यह जो दिन रात का उलट फेर होता है रात और दिन आते जाते रहते हैं, कभी दिन बड़ा होता है कभी छोटा है कभी रात बड़ी होती है तो कभी छोटी होती है, यह सब इन्सान की कारीगरी नहीं बल्कि अल्लाह की ताक़त व शक्ति की कारीगरी है।

इन्सान के ख़सारे में होने का मतलब यह है कि जब तक इन्सान इस दुनिया में जीवित रहता है तो उसकी पूरी जिन्दगी भागदौड़ और सख़्त परिश्रम में गुज़र जाती है और अगर ऐसे इन्सान का कर्म भी अच्छा नहीं है तो फिर इस दुनिया से जाने के बाद वह नरक का ईंधन बन जाता है।

इन्सान को अक्ल जैसी बड़ी नेमत दी गई है, वह सत्य और असत्य को पहचान सकता है। अपनी क्षमता से यह परख सकता है कि कौन अच्छा है कौन बुरा है कुरआन ने सही और गलत के अन्तर को भली भाँति स्पष्ट कर दिया है। इसके बावजूद अगर इंसान अपनी कामयाबी का रास्ता न ढूंढ सके तो इससे बड़ी वक़्त और नेमत की नाकदरी क्या हो सकती है।

कुरआन की इस आयत में उस इन्सान को सफल क़रार दिया है जो हक़ के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करता है और दूसरों को हक़ पर जमे रहने का उपदेश देता है, लेकिन यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि कितने लोग ऐसे हैं जो सत्य को जानते हुए भी असत्य की तरफ भागते जा रहे हैं और उनकी अकल पर इतना पर्दा पड़ गया है कि वह सच्चाई को जानने के बावजूद महज़ अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये हर ऐसी हरकत का सहारा ले रहे हैं जो उन्हें सफलता की तरफ नहीं बल्कि असलफता और बर्बादी की तरफ ले जा रही है।

इसलाहे समाज
जून 2019 2

मासिक

इसलाहे समाज

जून 2019 वर्ष 30 अंक 6

शव्वालुल मुकर्रम 1440 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क्क़्

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये
- टोटल पेज 28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़्

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	यह अल्लाह की कारीगरी है	2
2.	अल्लाह की रहमत से मायूस न हों	4
3.	क़ियामत के समय विश्व की दशा	6
4.	इस्लाम में मआफ करने की शिक्षा	8
5.	पब जी ऐप से बचाने की ज़रूरत	10
6.	बच्चों की तर्बियत में कोताही का सबब	11
7.	मरने के बाद क्या होगा?	12
8.	हज़रत मुहम्मद स० ने फरमाया	15
9.	इस्लाम का पैग़ाम इन्सानियत	17
10.	जहेज़ समाज की बड़ी समस्या	19
11.	इस्लाम में जानवरों के अधिकार	20
12.	इस्लाम की खूबियाँ	24
13.	नेकी का फल	27
14.	विज्ञापन	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

अल्लाह की रहमत से मायूस न हों

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''तुम बेतहरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये पैदा की गई है कि तुम नेक बातों का हुक्म करते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो'' (सूरे आल इमरान-११०) कुरआन की इस आयत में मुसलमानों को बेहतरीन उम्मत क़रार दिया गया है और इसका सबब भी बयान किया गया है जिस का मतलब यह है कि अगर यह उम्मत इन विशिष्ट खूबियों से सुसज्जित रहेगी तो भलाई वाली उम्मत रहेगी वर्ना इस विशिष्टता से वंचित क़रार दी जा सकती है और उसका खोया हुआ मकाम व स्थान दुबारा मिल सकता है जिसके बारे में कुरआन ने भविष्यवाणी की है।

उम्मते मुस्लिमा पूरी मानवता के लिये भलाई और शुभचिंतक बन कर आई थी लेकिन अफसोसनाक बात यह है कि आज हम स्वयं फराइज़ और वाजिबात से दूर होते चले जा रहे हैं। इबादत का एहतमाम नहीं है, इबादत की रूहानियत का अभाव होता जा रहा है, इबादत की जगह हमारी जिन्दगी और समाज में खुराफात ने जगह बना ली है। आज हमारी हालत यह है कि हम दूसरों से भलाई की असीमित उम्मीद रखते हैं लेकिन हम फराइज़ व वाजिबात से इतने गाफिल हो गये हैं कि हमारे ज़ेहन से यह बिन्दु लगभग निकल चुका है कि दूसरों की अपेक्षा हमारी ज़िम्मेदारियां ज़्यादा हैं लेकिन हम अपने दायित्व से बिल्कुल बे परवाह हैं। नेकियां हैं लेकिन ऐसा लगता है कि हमारी नेकियां और अच्छाईयां हमसे बेज़ार हैं। बेज़ारी की एक छोटी सी दलील यह है कि रमज़ान के गुज़रने के बाद हम पहले के मुक़ाबले में अपने परवर दिगार से बहुत दूर हो गए। इबादत की सूरते हाल यह है कि ईद के दिन भी दुनियावी मसरूफ़ियात में इतना डूब जाते हैं कि ईदुल फित्र के दिन नमाज़ के वक़्त भी ईदगाह में हाज़िर नहीं हो पाते हैं।

इन्सान के लिये आख़िरी चीज़ उम्मीद है और उम्मीद का खत्म हो जाना बेज़ारी की इंतिहा है। उम्मीद खत्म हो जाने के बाद मायूसी बचती है जब कि अल्लाह ने कुरआन में कई स्थानों पर अपने बन्दों को मायूसी से बचने का उपदेश दिय है।

''(मेरी जानिब) से कह दो कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो जाओ। निसन्देह अल्लाह तआला सारे गुनाहों को मआफ कर देता है, वाक़ई वह बड़ी बख्शिश बड़ी रहमत वाला है'' (सूरे नूर-५३)

कुरआन में अल्लाह ने फरमायाः

''अल्लाह की रहमत से निराश न हो'' (सूरे यूनुस-८७)

इन्सान की गलत फहमी यह है कि वह सोचता है कि उसने अपनी ज़िन्दगी में गुनाह पर गुनाह किये, अल्लाह की नाफरमानियां की हैं, बन्दों के अधिकार और अल्लाह

के अधिकार को अदा करने में गैर ज़िम्मेदारी का सुबूत दिया है तो अल्लाह उसे क्यों मआफ करेगा लेकिन इन्सान की यह सोच सरासर गलत है। अल्लाह की रहमत बहुत विस्तृत (वसीअ) है वह अपने बन्दों से बेपनाह मुहब्बत करता है शर्त यह है कि बन्दा अपने गुनाहों से तौबा करके अल्लाह से लौ लगाए लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि अल्लाह की रहमत और मग्फिरत की उम्मीद पर गुनाह करता जाए अल्लाह के अहकाम व फराइज़ की परवाह न करे और अल्लाह की सीमाओं, फराइज़ और वाजिबात पर अमल न करे और यह सोचे कि अल्लाह तो हमें मआफ कर देगा। यह उम्मीद सरासर धोका है और हम गलत फहमी का शिकार हैं। यह इतना बड़ा धोका और उम्मीद के इतनी विपरीत चीज़ है कि अगर क़ौम वास्तव में इस सोच व फिक्र में लिप्त हो जाए तो वह बेजा और बेफायदा उम्मीद की दलदल में धंसती चली जाएगी। इसी बेजा उम्मीद का ही परिणाम है कि पूरी मानवता और मिल्लत धोका खाती चली जा रही है। कामयाबी के रास्ते से दूर होती चली जा रही है वह दिशाहीन का शिकार है उसे अपना मार्गदर्शक कुरआन व हदीस को समझने के बजाए एक निराधार चीज़ से उम्मीद लगाए बैठा है। ऐसी सूरत में उम्मते मुस्लिमा से क्या उम्मीद की जा सकती है कि वह मार्गदशन का कर्तव्य निभाएगी।

मुलकी और विश्व स्तर पर हालात बड़ी तेज़ी से बदल रहे हैं। इन हालात को अपने हक़ में साज़गार बनाने के लिये ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने परवरदिगार को पहचानें, इबादतों का एहतमाम करें, तिलावत करें, मसनून दुआएं पढ़ें, तौबा व इस्तेग़फार करें और अपने असलाफ की जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करें। अल्लाह से लौ लगाएं। नाउम्मीदी और मायूसी किसी भी मसले का हल नहीं है, मायूसी हमें नाकामी की तरफ ले जाती है, कठिनाइयों और मुश्किलों से घबराने के बजाए इसका समाधान ढूंढने की ज़रूरत है, दुनिया की कोई भी समस्या (मसला) ऐसा नहीं है जिसका समाधान कुरआन व हदीस और हमारे असफलाफ ने पेश किया हो। शर्त यह है कि हम निःस्वार्थ, जज़्बा और ईमानदारी के साथ कुरआन व हदीस की तालीमात को अपनाएं। इस्लाम की सच्ची तालीमात को पूरी मानवता तक पहुंचाने का संकल्प करें और ऐसी फरेबी उम्मीद से बचें जो हमें महज़ धोका और अंधेरे में रखती है। खास तौर से दीन से दूर न हों, इन्सानियत के जौहर से खाली न हों, भलाई, श्रेष्टा और सृष्टि से दूर न हों, कर्म व कथन और आचरण से दूरी अल्लाह की रहमतों से बेज़ार और वंचित होने की अलामत और असल वजह है। इसलिये अल्लाह की रहमतें हर स्तर पर आर्थिक, राजनैतिक, दीनी, दुनियावी, इल्मी व तर्बियती और नैतिक हर एतबार से रूठती चली जा रही हैं। काश कि हम अल्लाह का होकर रहमतों का सज़ावार बन जाएं उसकी तरफ पलट कर उसके इंआम का उम्मीदवार बनकर और दीन अख़लाक बेज़ारी से छुटकारा हासिल करके कामयाब और सफल हो जाएं।

❑ ❑ ❑

क़ियामत के समय विश्व की दशा

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

जब क़ियामत आएगी यह ब्रहमांड तहस-नहस हो जाएगा। सूरज-चांद आपस में टकरा जाएंगे। पहाड़ रूई की तरह भागते फिरेंगे, कोई किसी का पूछनेवाला नहीं होगा। कुरआन में बड़े विस्तार के साथ इसका चित्र खींचा गया है।

सूर्च-चांद और तारों की दशाः

''जब सूर्य लपेट दिया जाएगा, जब तारे प्रकाशहीन हो जाएंगे, जब पर्वतों को चला दिया जाएगा, जब दस मास की गर्भवती ऊंटनियां छोड़ दी जाएंगी, जब जंगली जानवर घबराकर एकत्र हो जाएंगे, जब समुद्र उबल पड़ेंगे, जब लोगों को उनकी आत्माओं से जोड़ दिया जाएग जब जीवित गाड़ी गई कन्या से पूछा जाएगा कि उसकी हत्या किस गुनाह के कारण की गई, और जब कर्मपत्र खोल दिए जाएंगे, और जब आकाश की खाल उतार दी जाएगी, और जब नरक भड़काई जाएगी, और जब स्वर्ग निकट कर दिया जाएगा तो उस दिन प्रत्येक मनुष्य जान लेगा, जो कुछ वह लेकर आया है''। (सूरा-८१, अत तकवीर आयतें १-१४)

कुरआन में एक अन्य स्थान पर इसका वर्णन इस प्रकार हुआ है।

''वह पूछता है आखिर क़ियामत का दिन कब आएगा?'' (तो बता दो) जिस दिन आंखें पथरा जाएंगी तथा चांद प्रकाशहीन हो जाएगा और सूरज तथा चांद एकत्र कर दिए जाएंगे। उस दिन मनुष्य पुकारा उठेगा, ''आज शरण लेने का स्थान कहा है?'' कुछ नहीं उस दिन कोई शरणस्थल नहीं होगा। उस दिन तुम्हारे रब ही की ओर सबको जाकर ठहरना है। उस दिन मनुष्य को बता दिया जाएगा, जो कुछ उसने आगे बढ़ाया और पीछे टाला। (सूरा-७५, अल-क़ियामह, आयतें-६-१३)

अर्थात क़ियामत के दिन प्रत्येक व्यकित के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्म के अनुसार स्वर्ग या नरक में डाल दिया जाएगा। कुरआन में हैः

''जब आकाश फट पड़ेगा, और जब तारे बिखर पड़ेंगे, और जब समुद्र उबल पड़ेंगे, और जब क़ब्रों के अन्दर जो हैं उन्हें उठा दिया जाएगा, तब प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा जो कुछ उसने आगे भेजा और जो कुछ उसने पीछे छोड़ा हैं। ऐ मनुष्य, किस चीज़ ने तुम्हें अपने उदार 'रब' के विषय में धोखे में डाल रखा है, जिसने तुझे पैदा किया, और तुझे ठीक ठाक, और सन्तुलित बनाया। फिर जिस प्रकार के रूप में चाहा तुम्हें ढाल दिया, मगर तुम तो बदले के दिन (क़ियामत) को झुठलाते हो''(सूरा-८२ अल इन्फ़ितार, आयतें१-६)

पृथ्वी और आकाश की दशाः

कुरआन में है

''तथा उन लोगों ने अल्लाह का जैसा सम्मान करना चाहिए था, नहीं किया। क़ियामत के दिन सारी धरती उसकी मुटठी में होगी तथा आकाश उसके दाएं हाथ में लिपटे हुए होंगे। वह हर प्रकार के शिर्क (साझेदारी) से पवित्र और उच्च है''। (सूरा-३६, अज़ जुमर, आयत-६७)

''जब धरती भूकम्प से हिला दी जाएगी, और धरती अपने बोझ को बाहर निकाल फेंकेगी, और मनुष्य कहने लगेगा, ''इसे क्या हो गया है?'' उस दिन वह अपना वृत्तान्त सुनाएगी, इसलिए कि तुम्हारे रब ने उसे आदेश दिया होगा''। (सूरा-६६, अज़ ज़िलज़ाल, आयत-१-५)

पर्वतों की दशाः

कुरआन में है-

"वह खड़खड़ा देने वाली, क्या है वह खड़खड़ा देने वाली, और तुम्हें क्या पता कि क्या है वह खड़खड़ा देने वाली? जिस दिन लोग बिखरे हुए पतिंगों के सदृश हो जाएंगे, और पर्वत धुनके हुए रंग बिरंगे ऊन जैसे हो जाएंगे"। (सूरा-१०१, अल-क़ारिया, आयतें-१५)

इस प्रकार कुरआन में अत्यन्त विस्तारपूर्वक क़ियामत का वर्णन किया गया है, ताकि मनुष्य अपनी अवस्था को समझे और क़ियामत के लिए अपने आपको तैयार करे कि वह कर्मपत्र लेकर अल्लाह के पास जाएगा, ताकि उसको अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त हो।

पवित्र कुरआन में इस बात की चेतावनी दी गई है कि इनसान यह न समझ ले कि मरने के बाद वह सड़ गल जाएगा और फिर उसको दोबारा जीवित नहीं किया जाएगा बल्कि उसे अवश्य उठाया जाएगा, ताकि वह अपने कर्मों का हिसाब दे। "नहीं! मैं सौगन्ध खाता हूं क़ियामत के दिन की और नहीं! सौगन्ध खाता हूं उस आत्मा की, जो मलामत करने वाली है, क्या मनुष्य यह समझता है कि हम कदापि उसकी हडिडयों को एकत्र नहीं करेंगे। हां, अवश्य करेंगे? हम उसकी पोरों तक को ठीक-ठाक करने का सामर्थ्य रखते हैं"। (सूरा-७५, अल-क़ियामह, आयतें१-४)

अर्थात अल्लाह सर्वशक्तिमान है। वह जो चाहे कर सकता है। इसलिए क़ियामत के दिन उंगलियां और शरीर के दूसरे भाग सड़-गल गए होंगे उनको दोबारा ठीक कर देगा, और उस दिन सभी मनुष्यों को उठा खड़ा करेगा।

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। जिन सदस्यों को हार्ड कापी न मिल सके वह हमारी वेब साइट से इसलाहे समाज के हर अंक लोड कर सकते हैं इसके अलावा इसलाहे समाज की पीडीएफ फाइल अपने स्मार्ट फून पर भी मंगवाया जा सकता है। इसलिए इसलाहे समाज के सदस्यों से अनुरोध है कि वह अपना वाट्सएप नम्बर और ईमेल आई डी कार्यालय को अवश भेजें ताकि हार्ड कापी न मिलने की सूरत में उनको पीडीएफ फाइल ईमेल या स्मार्ट फून पर भेजा जा सके। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

इस्लाम में मआफ और सहन करने की शिक्षा

नौशाद अहमद

इस्लाम धर्म में दया करूणा की बड़ी अहमियत है, जिस समाज में दया और मआफ करने का जजबा पाया जाता है वह समाज अम्न व शान्ति का प्रतीक होता है उस समाज के लोग सुखमय जीवन गुजारते हैं, इसी लिये इस्लाम ने मआफी तलाफी पर बहुत जोर दिया है। और हदीस में मआफ करने की बड़ी प्रशंसा की गयी है। जो इन्सान किसी को मआफ कर देता है वह अल्लाह के नेक बन्दों में गिना जाता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जो लोग गुस्सा पी जाते हैं (अर्थात गुस्से को बर्दाश्त कर लेते है) और दूसरों के दोष को मआफ कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह तआला को बहुत पसन्द और प्रिय हैं'' (सूरे आल इमरान-१३४)

कुरआन ने गुस्सा सहन करने वालों की सराहना करते हुए फरमायाः

''वह लोग जो बड़े गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब गुस्से में आ जाते हैं तो मआफ कर देते हैं'' (सूरे शूरा-३७)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''बलवान वह नहीं है जो कुश्ती में दूसरों को पछाड़ दे बल्कि हकीकत में बहादुर एवं बलवान वह है जो गुस्से की हालत में अपने ऊपर कन्ट्रोल रखे'' (बुखारी १६१२, मुस्लिम १०७)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र कुछ ऐसे लोगों के पास से हुआ जो कुश्ती लड़ रहे थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या हो रहा है? लोगों ने कहा फलाँ व्यक्ति जिससे भी कुश्ती लड़ता है अपने विरोधी को पछाड़ देता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं तुम्हें इस से भी ताक़तवर आदमी के बारे में न बताऊं वह व्यक्ति जिससे किसी दूसरे व्यक्ति ने गुस्सा दिलाने वाली बात कही हो और वह इस गुस्से पर कन्ट्रोल पा गया और अपने साथी के शैतान पर भी कन्ट्रोल पा गया। (बज़्ज़ार यह हदीस हसन है)

सहीह मुस्लिम की रिवायत है हज़रत इब्ने मसऊद रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम पहलवान किसे मानते हो? उन्होंने कहा कि जिसे पछाड़ा न जा सके तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया पहलवान वह है जो गुस्से के वक़्त अपने ऊपर कन्ट्रोल रखे।

गुस्से के वक़्त शैतान इन्सान को भड़काता है इसका सबसे बेहतरीन एलाज यह है कि गुस्से के वक़्त अल्लाह से मदद और पनाह माँगी जाए। कुरआन में एक आयत का अर्थ है कि

''अगर तुम्हें शैतान की तरफ से चोका लगे (अर्थात शैतान गुस्से को उत्तेजित कर दे) तो अल्लाह की पनाह माँगो। यक़ीनन वही सुनने वाला जानने वाला है''

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम में से किसी को

गुस्सा आए तो खामोश हो जाए। (मुसनद अहमद, सहीहुल जामे-६६३)

अबू ज़र रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो वह बैठ जाए अगर गुस्सा खत्म हो तो ठीक वर्ना लेट जाए (मुसनद अहमद, अबू दाऊद, इब्ने हिब्बान, सहीहुल जामे ६६४)

ऊपर बयान की गई हदीसों से मालूम हुआ कि इन्सान की असल ताक़त सब्र व सहन है। गुस्से की हालत में शैतान इन्सान को बहकाता और भड़काता है ऐसे वक़्त में अगर कोई इन्सान अपने गुस्से पर काबू पा लेता है तो सही मानों में वही पहलवान और बहादुर है। जो अपने गुस्से को कन्ट्रोल नहीं कर सका तो इसका मतलब यह हुआ कि शैतान उसको बहकाने में कामयाब हो गया और यह बहादुरी नहीं है बल्कि इन्सान की कमजोरी है, इस कमज़ोरी पर कन्ट्रोल करना ज़रूरी है वर्ना गुस्सा इन्सान को नकारात्मक दिशा में डाल देता है।

जब किसी इन्सान को गुस्सा आता है तो वह आचरण और मान मर्यादाओं को भूल कर अनाप शनाप बोलने लगता है जैसा कि आपसी झगड़ों के मौक़े पर देखा जाता है कि लोग मामूली मामूली बात को लेकर एक दूसरे को गाली गुलूच पर उतर आते हैं जबकि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुसलमान वह है जिस की जुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफूज रहें'' (बुखारी)

ऊपर बयान की गई हदीसों से मालूम हुआ कि इन्सान की असल ताक़त सब्र व सहन है। गुस्से की हालत में शैतान इन्सान को बहकाता और भड़काता है ऐसे वक़्त में अगर कोई इन्सान अपने गुस्से पर काबू पा लेता है तो सही मानों में वही पहलवान और बहादुर है। जो अपने गुस्से को कन्ट्रोल नहीं कर सका तो इसका मतलब यह हुआ कि शैतान उसको बहकाने में कामयाब हो गया और यह बहादुरी नहीं है बल्कि इन्सान की कमजोरी है, इस कमज़ोरी पर कन्ट्रोल करना ज़रूरी है वर्ना गुस्सा इन्सान को नकारात्मक दिशा में डाल देता है।

इसी तरह से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सबसे मुकम्मल ईमान रखने वाले वह हैं जो सबसे अच्छी आदतों वाले हों'' (तिर्मिज़ी-२००३)

कहने का अर्थ यह है कि इस्लाम ने जहां कानून की सीमा में रहते हुए जालिमों को उसके जुल्म से रोकने का आदेश दिया वहीं अपने अनुयाइयों को दूसरों के साथ दया करूणा नर्मी और मआफी का व्यवहार करने का भी हुक्म दिया है। हम सभी लोगों को एक दूसरे के साथ नर्मी और शालीनता का मामला करना चाहिए, सख्ती और क्रोध से बचना चाहिए, इस्लाम हम सभी लोगों को यही पाठ सिखाता है क्योंकि सख्ती और बदजुबानी किसी भी मसले का हल नहीं है बल्कि एक दूसरे को बर्दाश्त करने में है।

❑ ❑ ❑

पब जी ऐप से बचाने की ज़रूरत

एन. अहमद

टेकनालोजी की बढ़ती रफतार ने ऐसी तरक्की की है कि खुद बनाने वाले भी हैरान हैं। इसी टेक्नोलोजी ने आज की दुनिया में स्मार्ट फोन को कला के नाम पर ऐसे ऐसे ऐप दिये हैं जो नई नस्ल को गलत दिशा में ले जा रहे हैं और उनका सही गाइडेन्स न होने के कारण वह इस तरफ दीवानावार भागते जा रहे हैं।

कुछ ऐप के बुरे प्रभाव से कहीं लड़ाई हो रही है कहीं संबन्ध टूट रहे हैं, रिश्ते नाते बिखर रहे है, चोरियां हो रही हैं, नई नस्ल के जीने का अन्दाज़ बदल रहा है, जीने का अन्दाज़ नकारात्मक होता जा रहा है, ऐप ने इन्साल को इतना व्यस्त कर दिया है कि वह कान पर पड़ने वाली आवाज़ों का सहीह जवाब भी नहीं दे सकता। एक मानसिक गिरावट है जो इन्सान को दिशाहीन बना रही है, वह अपना मकसद खोता जा रहा है, अपने जीवन के मिशन को दिमाग से निकाल रहा है, ऐप ने नई नस्ल के अन्दर की उन मर्यादाओं को भी निकाल बाहर किया है जो एक इन्सान के जीवन का अटूट हिस्सा हैं जो ऐप इन्सान को अपने आस पास की गतिविधियों से अंजान बना दे, वह अपनी जिन्दगी के असल मकसद को भूल कर एक व्यर्थ और बेकार काम में लगा दें और अपने पालनहार की उपासना से दूर कर दें वह ऐप इन्सान के लिये लाभकारी कैसे हो सकता है?

आज कल पबजी ऐप के नुकसानात के बारे में बहुत कहा और सुना जा रहा है, हमारे प्रिय देश समेत संसार के विभिन्न देशों में इस ऐप पर पाबन्दी लगा दी गई है लेकिन इस पाबन्दी के बावजूद इस ऐप ने दिमाग पर ऐसा प्रभाव डाला कि जो एक बार इस ऐप के जाल के चक्कर में फंसता है तो वह उसका इस ऐप के भँवर से निकलना लगभग असंभव हो जाता है।

आज कल पबजी ऐप के नुकसानात के बारे में बहुत कहा और सुना जा रहा है, हमारे प्रिय देश समेत संसार के विभिन्न देशों में इस ऐप पर पाबन्दी लगा दी गई है लेकिन इस पाबन्दी के बावजूद इस ऐप ने दिमाग पर ऐसा प्रभाव डाला कि जो एक बार इस ऐप के जाल के चक्कर में फंसता है तो वह उसका इस ऐप के भँवर से निकलना लगभग असंभव हो जाता है।

वक़्त, धन दौलत और सेहत को बर्बाद और नुकसान पहुंचाने वाले बेशुमार ऐप होंगे लेकिन इस ऐप ने नई नस्ल को दिशाहीन बनाने और अपने मकसद से गाफिल बनाने और मानसिक रूप से कमज़ोर करने में जो रोल अदा किया है उसने नकारात्मक माने जाने वाले तमाम ऐपों के रिकार्ड तोड़ दिये हैं। इसलिये हम सभी लोगों को इस ऐप से दूर रहने के साथ दूसरों को भी इस ऐप के नकारात्मक नुकसानात से बाखबर करना चाहिए। मां बाप और अभिभावकों को इस बारे में बिल्कुल सचेत रहना चाहिए। इसके अलावा समाज के शिक्षित लोगों को इस ऐप के नुकसानात के बारे में बच्चों के अभिभावकों को जागरूक करना चाहिए। एन.जी.ओज़ और स्कूल इस सिलसिले में अहम रोल अदा कर सकते हैं।

❑ ❑ ❑

बच्चों की तर्बियत में कोताही का सबब

लेखः डा० मुहम्मद इसमाईल
अनुवादः अब्दुल मन्नान शिकरावी

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो अपने आपको और अपने अहल व अयाल (बाल बच्चों) को उस जहन्नम से बचाओ जिस का ईंधन इंसान और पत्थर हैं''

इस्लामी सिद्धांत के अनुसार बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण का मक़सद औलाद को जहन्नम से बचाना और ऐसी नस्ल तैयार करना है जो अपने दीन और दुनिया दोनों के लिये काम करे। नेकी, परहेज़गारी, ईमान और तौहीद के ज़रिए दुनिया व आख़िरत के सौभाग्य से सुसज्जित हो। हर इन्सान अपने सांस्कृतिक मेयार के अनुसार शिक्षा को तो समझता और जानता है लेकिन प्रशिक्षण के सिलसिले में सब अंजान और गाफिल हैं जिसकी वजह से वह अपनी औलाद के प्रशिक्षण में गलत तरीका अपनाते हैं इस लिये हर मां बाप के लिये ज़रूरी है कि वह प्रशिक्षण की बुनियादों और सिद्धांतों को जाने और समझे और इस बारे में सहीह तरीक़ा अपनाए।

जब आप किसी से यह मालूम करें या पूछें कि यह क्या है फिर वह जवाब दे कि मुझे मालूम नहीं इसी को अज्ञानता कहा जाता है लेकिन आप किसी से किसी प्याले के बारे में मालूम करें और वह कहे कि यह किताब है तो उसका जवाब गलत होगा क्योंकि सवाल का जवाब बताने वाले को किताब और प्याले का अन्तर मालूम नहीं है। मालूम यह दुआ कि गलत जानकारी अज्ञानता की एक क़िस्म है लेकिन कभी कभार यह अज्ञानता से भी ज़्यादा ख़तरनाक हो जाती है। मेरे कहने का मक़सद यह है कि कुद लोग प्रशिक्षण पर ध्यान ही नहीं देते उन्हें इसकी परवाह ही नहीं होती लेकिन कुछ दूसरे लोग प्रशिक्षण का गलत तरीका अपनाते हैं। इसको दुरूस्त करना और गलत फहमी को जड़ से खतम करना ज़रूरी है। अधिकतर लोगों के नजदीक प्रशिक्षण की कोई अहमियत नहीं है वह यह जानते ही नहीं हैं कि शिक्षा की तरह प्रशिक्षण (तर्बियत) भी बहुत ज़रूरी है जबकि ज़्यादातर लोगों को मालूम ही नहीं कि वह अपने बच्चों को ट्रेनिंग किस प्रकार करें। बच्चों की तर्बियत का एक तरीका यह है कि उसको न ज़्यादा ढील दिया जाए न ज़्यादा सख्ती की जाए क्योंकि ज्यादा सख्ती से भी बच्चे बिगड़ जाते हैं और ज़्यादा ढील देने से भी दिशाहीन हो जाते हैं। जटिल बातों के जरिए बच्चों की तर्बियत करना अनुचित है यह बच्चों के हक़ में लाभकारी नहीं है, बातों को समझाने के लिये आसान तरीका अपनाया जाए। इसी तरह बच्चों की तरबियत में नौकरों और सेवकों पर निर्भर रहने के बजाए स्वयं इस सिलसिले में मेहनत की जाए। तालीम के साथ तर्बियत इस लिये भी ज़रूरी है कि जब तरबियत अच्छी होगी तो बच्चे जटिल मसलों को स्वयं हल कर लेंगे क्योंकि तालीम तो एक थियोरी है जबकि तरबियत एक प्रेकटिकल और व्यवहारिक रूप है जिस के द्वारा सीखी हुई बातों को व्यवहारिक रूप दिया जाता है।

आज कल तर्बियत का काम अध्यापकों से छीन कर मीडिया के हवाले कर दिया गया है जो बच्चों को दिशाहीन बनाने में लगा हुआ है क्यों कि मीडिया में सबसे ज़्यादा टेलीवीजन अपने खतरनाक रवैये से बच्चों के मनोविज्ञान को प्रभावित कर रहा है। कुरआन व हदीस हमारे लिये मुकम्मल जीवन शैली है हमें इसी की रोशनी में अपने बच्चे की तालीम व तबियत करने की ज़रूरत है।

मरने के बाद क्या होगा?

मौलाना नियाज़ अहमद तैयबपूरी

जहाँ तक इस प्रश्न का मामला है कि मरने के बाद आदमी का क्या होगा? कहाँ जाएगा? तो भौतिक वादी इसका ऐसा उत्तर देते हैं जिसमें वह मानवता को पुशओं सेभी नीचे उतार देते हैं, बड़े अभिमान के साथ मानव के भरे पुरे जीवन के परिणाम के बारे में कहते हैं कि मरने के बाद आदमी खत्म हो जाएगा, जमीन उसे अपने पेट में समेट लेगी जैसे लाखों जानदारों को समेट चुकी है जबकि जमीन मानव को उसकी पहली हालत में लौटा देगी।

इनके यहाँ यही जीवन की कहानी है पैदा होते हैं और मर कर मिटटी में मिल जाते हैं, बुराई की सज़ा और अच्छाई का बदला नहीं है। अच्छे और बुरे सब बराबर हैं। वह आदमी जो अपनी इच्छाओं की कुर्बानी देकर दूसरों की सेवा करे और जो अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए दूसरों को कष्ट पहुंचाए दोनों बराबर हैं। इसी प्रकार जिसने सच और हक के लिए कुर्बानी दी और जिस ने गलत और नाहक काम के लिए दूसरों पर अत्याचार किया सब इनके (भौतिकवादियों) के यहां बराबर हैं।

जब बात ऐसी है तो संसार की कौन सी चीज़ मानव को दूसरों से प्रतिष्ठित करती है? इसके आस पास की चीजें को क्यों इसके अधीन किया गया है? इसको ऐसी आश्चर्यजनक योग्यता, आध्यात्मिक तथा मानसिक शक्ति क्यों प्रदान की गई जो दूसरों को नहीं दी गई? इसका भेद क्या है कि आदमी आगे बढ़ने तथा उन्नति करने का प्रयास करता है? जबकि इसका अन्तिम परिणाम यही है कि वह खत्म हो जाएगा?

मुसलमान इस बात का ज्ञान रखते हैं कि मरने के बाद उनका क्या परिणाम होगा? वह इस बात पर विशवास रखते हैं कि इनको इस दुनिया के लिए नहीं पैदा किया गया है बल्कि यह दुनिया उनके लिए बनाई गई है।

यह जानते हैं कि इन्हें न खत्म होने वाले जीवन तथा सदैव बाकी रहने वाले घर (जन्नत) के लिए पैदा किया गया है। यह इस जीवन में आखिरत के लिए तैयारी करते हैं, यहां वह कार्य करते हैं जो मरने के बाद वाले जीवन में लाभदायक हों। आध्यात्मिक तौर से तरक्की करते हैं यहां तक कि वह इस योग्य हो जाते हैं कि उस अच्छे घर में प्रवेश करे जिस में केवल अच्छे लोग ही जाएंगे। और वह जन्नत का घर है।

जो इस संसार को इतने मजबूत और सुंदर ढंग से बनाने वाला है वह हर चीज़ के बारे में जानकारी रखता है उसने हर चीज़ के लिए एक सीमा निश्चित की है। इन सब के बाद आदमी इस बात पर ईमान रखता है कि जीवन की यह ठाठ बाट उठ जाएगी जबकि लूटने वाले ने लूटा, चोर ने चोरी किया, और इन अपराधियों को सज़ा नहीं दी जा सकी और उस मजलूम के लिए बदला नहीं लिया जा सका है जिस का अल्लाह के अतिरिक्त कोई मददगार नहीं, और आकाश की छांव के अतिरिक्त कोई पनाह की जगह नहीं। अच्छे आदमी को लोगों ने सताया था पर इसे बदला नहीं दिया जा सका। यह तो न्याय के

विपरीत है संसार को इतने मज़बूत तथा सुंदर ढंग से बनाने वाला अल्लाह इससे पाक है अर्थात वह इन्सान के साथ न्याय चाहता है। पवित्र कुरआन ने इसकी वास्तविकता को इन शब्दों में बयान किया है।

''क्या तुम यह गुमान करते हो कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ लौटाए ही नहीं जाओगे। अल्लाह सच्चा बादशाह है''। (सूरह मोमिन १५-१६)

फरमाया : ''क्या इंसान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा''। (सूरे कियामः-३६)

''क्या उन लोगों का जो बुरे काम करते हैं यह गुमान है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और नेक काम किए कि उनका मरना जीना बराबर हो जाए, बुरा है वह फैसला जो वह कर रहे हैं'' (सूरे जासिया-२१)

इंसान को क्यों पैदा कया गया है?

जहां तक इस सवाल की बात है तो हर आदमी पर अनिवार्य है कि वह अपने आप से सवाल करे कि उसे इस दुनिया में क्यों पैदा किया गया है? दूसरे प्राणियों की अपेक्षा प्रधानता क्यों प्राप्त है? जमीन के ऊपर हमें करना क्या है? इसका उत्तर कुरआन व हदीस के पास मौजूद है। किसी चीज़ का बनाने वाला अपनी बनाई हुई चीज़ के भेदों को जानता है कि उसने उसे क्यों बनाया है? और उसे इसी तरह क्यों बनाया है किसी दूसरी शक्ल में क्यों नहीं बनया?

अल्लाह ने मानव को बनाया, इसकी सारी चीज़ों की तदबीर और देख रेख वही करता है हमें चाहिए कि हम जानें कि ए हमारे मालिक! तूने मानव को क्यों पैदा किया है?

.....क्या इनको केवल खाने पीने के लिए बनाया है? क्या इनको खेलने कूदने के लिए पैदा किया है? क्या इनको इसलिए पैदा किया गया है ताकि वह जमीनपर चलें जमीन की पैदावार खाएं फिर मर कर वैसे ही मिटटी हो जाएं और कहानी खत्म ?

मानव के अन्दर इन शक्तियों तथा योग्यताओं को क्यों रखा गया है? इसे बुद्धि, इरादा, और सोचने समझने की आश्चर्यजनक शक्ति प्रदान की गई है? हम को इस प्रश्न का उत्तर अल्लाह ने कुरआन में बताया है कि उसने मानव को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, लोग केवल उसी के आगे शीर्ष झुकाएं किसी दूसरे के सामने सर न झुकाएं उसके आदेशों का अनुपालन करें।

अल्लाह तआला ने फरमाया है:

मैंने इंसानों और जिन्नातों को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, मैं उनसे न रोज़ी चाहता हूं और न यह चाहता हूं कि वह मुझे खिलाएं अल्लाह रोज़ी देने वाला और ताकत वाला है। (सूरे ज़ारियात ५६-५८)

इस संसार में गौर करने वाला देखेगा कि इसकी हर जीवित चीज़ दूसरे के लिए काम करती है।

यहां पर यही सवाल पैदा होता है। प्रकृति इसका उत्तर देती है कि मानव अल्लाह के लिए है उसकी पूजा के लिए, अल्लाह के हक़ को अदा करने के लिए यह जाएज़ और सम्भव नहीं है कि मानव ज़मीन व आकाश में किसी दूसरी चीज़ के लिए पैदा किया गया हो। क्योंकि ज़मीन व आकाश की सारी चीज़ें इसके अधीन हैं, इसी की सेवा करती हैं जैसा कि देखा जाता है।

इस्लाम ने मानव को सम्मान दिया है, इस्लाम की नज़र में मानव का बहुत महत्व है, संसार की बहुत सारी मखलूक प्राणीवर्ग में इसे श्रेष्ठता प्राप्त है, अल्लाह ने प्राणीवर्ग में ऊंचा स्थान देकर इसे सम्मानित

किया है, मानव को जिन चीज़ों के द्वारा सम्मानित किया गया है संक्षेप में इनका वर्णन किया जा रहा है।

अल्लाह ने मानव को इस प्रकार सम्मानित किया है कि उसे ज़मीन पर अपना खलीफ़ा बनाया है। यह वह स्थान है जिसको पाने के लिए फरिश्तों की गर्दनें उठी थीं और इनके मन में इसको पाने की चाहत पैदा हुई थी, लेकिन इनको नहीं दिया गया अल्लाह ने इस महान पदवी को मानव को प्रदान किया।

इसका सविस्तार वर्णन पवित्र कुरआन के सूरे बक़रा में है।

इन्सान के शरीर की रचना बहुत अच्छे ढंग से की है, इस्लाम ने इस बात का एलान किया कि अल्लाह ने इंसान को बहुत अच्छे ढंग से बनाया है सूरे तीन-४ और सूरे तग़ाबुन में फरमाया ''उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाईं और बहुत अच्छी बनाईं'' (सूरे तगाबुन-३)

इन्सान के शरीर में रूह फूंक कर इसे प्रधानता देनाः ऊपर बयान की गई चीज़ों के अतिरिक्त अल्लाह ने इसके अंदर रूह फूंकी, सारे इंसानों के पिता आदम अ० ही के लिए यह विशेषता नहीं है कि इनके शरीर में अल्लाह ने अपनी रूह फूंकी है जैसा कि कुछ लोगों को इसके बारे में भ्रम हुआ है बल्कि इनके बेटों, पूरी संतान और नस्ल को यह विशेषता प्राप्त है अल्लाह ने इसका वर्णन कुरआन में किया है। फरमाया फिर उसकी नस्ल को भी बेहैसियत पानी (वीर्य) से चलाया जिसे ठीक ठाक कर के उसमें अपनी रूह फूंकी, उसने तुम्हारे कान, आंख और दिल को बनाया (इसके बावजूद तुम उसका बहुत कम शुकरिया अदा करते हो (सूरे सजदा८-९)

रूह फूंकने का यह सम्मान केवल आदम अ० के लिए नहीं था बल्कि सारी मानवता के लिए है अल्लाह ने उसी प्रकार इनको दिमाग ज्ञान और रूह प्रदान किया है जैसे आदम अ० को दिया था और इनको ज़मीन पर खलीफा बनाया कुरआन ने स्पष्ट किया है कि सारे मानव सम्मान जनक हैं हमने आदम की संतान को बड़ी इज्ज़त दी, इनको ज़मीन और पानी की कशतियां दीं इनको पाकीज़ा (पवित्र) चीज़ों की रोज़ी प्रदान की, और बहुत सारे प्राणीजनों पर इन को प्रधानता दी। (सूरे इसरा-७०)

यह सारी चीज़ें इस बात को साबित करती हैं कि इनसान सारे प्राणी वर्ग में विशिष्ठ और अलग हैसियत रखता है जानवर भले ही मिटटी से पैदा किए जाने में मानव के समान हैं, पर दोनों में बड़ा अंतर है अल्लाह ने मानव को बुद्धि और ज्ञान प्रदान किया, यह चीज़ें पशुओं में नहीं पाई जाती हैं पशु को अल्लाह ने किसी प्रकार की इबादत का आदेश नहीं दिया है जबकि मानव को इस बात का आदेश दिया गया है कि वह अल्लाह के सारे आदेशों का अनुपालन करे।

इन पशुओं को केवल इसलिए पैदा किया गया है ताकि मानव इनको अपने काम में लाएं, कुछ जानवरों का दूध इस्तेमाल किया जाता है और सवारी की जाती है।

मानव की असलीयत के विषय में यह कल्पना उस कल्पना से भिन्न है जो डारविन ने पेश किया था इस का कहना था कि मानव पहले जानवर था इसने तरक्की करते करते मानव की मौजूदा शक्ल धारण की है वैज्ञानिकों ने डारविन के इस विचार को नकार दिया है। विज्ञानिक दृष्टि कोण से यह साबित नहीं हो सका है कि मानव असल में जानवर था यह केवल एक विचार है जो तर्क रहित है। डी एन ए चेकअप ने डारविन के दृष्टि कोण को धराशायी कर दिया है और उसके दृष्टि कोण का अब कोई महत्व नहीं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः आसानी पैदा करो और मुश्किल न पैदा करो, खुशखबरी सुनाओ और घृणा की बातें न करो। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स ने सूरज के उसके पश्चिम से निकलने से पहले तौबा कर ली अल्लाह उसकी तौबा को कुबूल करेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सदक़ा करने से माल में किसी तरह की कमी नहीं होती और अल्लाह तआला बन्दे को मआफ करने से उसकी इज़्ज़त में बढ़ोतरी कर देता है और जो अल्लाह के लिये झुकता है तो अल्लाह उसके दर्जे को बुलन्द कर देता है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या तुम जानते हो गीबत क्या है? सहाब-ए-किराम ने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अपने भाई का जिक्र इस तरह करो जिसको वह नापसन्द करे। पूछा गया आप का क्या ख्याल है अगर मेरे भाई के अन्दर वह बातें पायीं जायें जो मैं ने कही हैं? फरमायाः जो बातें तुम ने कही हैं, अगर उसमें पायी जायें तो यह गीबत है और अगर न पायी जायें तो वास्तव में तुम ने उस पर झूठा आरोप लगाया। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

मुफर्रिदून आगे बढ़ गये। लोगों ने पूछा मुफर्रिदून क्या है? फरमायाः अल्लाह को ज्यादा से ज्यादा याद करने वाले मर्द और औरत। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-५४)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तमाम कामों में दायें साइड को पसन्द करते थे, पाकी हासिल करने में, कंघी करने में और जूता पहनने में। (बुखारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह को हर वक़्त याद करते थे। (मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो वसल्लम से बयान करती हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फज्र की दो रकअ़तें दुनिया और उसकी तमाम चीज़ों से बेहतर हैं। (मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः तीन चीज़ें मय्यत के साथ जाती हैं और दो चीज़ें लौट आती हैं और एक चीज़ बाकी रह जाती है उसके परिवार वाले उसका माल और उसका अमल उसके साथ जाता है लेकिन उसके परिवार उसका माल लौट आता है और उसका अमल बाकी रह जाता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो, बेशक सफों को बराबर करना नमाज़ की दुरूस्तगी में से है। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे जिब्रईल पड़ोसी के बारे में बराबर वसीयत करते रहे यहां तक कि मुझे यह यकीन होने लगा कि वह उसको वारिस बना देंगे। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों से भीक मांगने वाला आदमी क्यामत के दिन इस हाल में आये गा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इस्लाम का पैग़ाम इन्सानियत

शमीम अहमद अंसार उमरी

दीने इस्लाम इन्सानियत का है दीन
जो मुहब्बत है इस में किसी में नहीं
हम मुहब्बत के इंसानियत के अमीं
हम मुबल्लिग़ हैं अंसारे दीने मतीं
हम मुसलमान हमदर्दे इन्सान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

दीन का पैग़ाम पैगामे इन्सानियत
रब का एहसान इन्आमे इन्सानियत
दीन का इतमाम इतमामे इन्सानियत
हुस्ने अंजाम इकरामे इन्सानियत
आदिमियत के दाई हैं इन्सान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

हम बातिल से टकराएंगे
हक़ को अपनाएंगे हक़ जहां पाएंगे
दाइए अम्न हैं अम्न फैलाएंगे
अम्न होगा वहां हम जहां जाएंगे
ख़ैर उम्मत हैं हम एहले ईमां हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

वारिसाने उलूमे नबुव्वत हैं हम
रहनुमायाने राहे हिदायत हैं हम
काति-ए-शिर्क व बिदअत हैं हम
पासदाराने तौहीद व सुन्नत हैं हम
हम किताब व सुनन के निगेहबान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

रह्मते कुल जहां आखिरी हैं नबी
सारे इंसा हैं उनके ही उम्मती
रब का पैग़ाम है उनका पैगाम ही
पैरवी बस उन्हीं की करें हम सभी
हम मुती उनके महबूबे रहमान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

फर्ज़ है हम पे उस ज़ात की बन्दगी
सारे इन्सान को जिसने दी ज़िन्दगी
इन्हेराफे इबादत है शर्मिन्दगी
हम क्यों ना करें उसकी पाबन्दगी
हम सभी रब के पाबन्दे फरमान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

या इलाही हमें हक़ की पहचान दे
हमको असलाफ की शौकत व शान दे
हम को तौफीक़ इख्लास व एहसान दे
हुस्ने अख्लाक़ दे सिददीक़ ईमान दे
दीने रहमत पे हम दिल से कुर्बान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

शब्द -अर्थ

अर्मी-रक्षक
मुबल्लिग-प्रचारक
अंसार-मददगार
मती-मज़बूत
दाई-आवाहक, प्रचारक
बातिल- असत्य
ख़ैर-भलाई
उलूम-ज्ञान
वारिसीन-हक पाने वाला, प्रतिनिधि

शब्द -अर्थ

रहनुमा-मार्गदर्शक
पास्दारान-रक्षक
निगेहबान-निगरानी करने वाला, संरक्षक
जहां-संसार
मुती-अनुसरण और पैरवी करने वाला
महबूब-प्रिय
रहमान-दयालु
बन्दगी-उपासना

शब्द -अर्थ

इन्हेराफ-फिरना, मुंह मोड़ना
शर्मिन्दगी-पछतावा
असलाफ-बुजुर्ग, पूर्वज
तौफीक़- क्षमता
सिददीक-सच्चा
रहमत-दया, करूणा

जहेज़ समाज की बड़ी समस्या

सफीयुल्लाह अंसारी

आज जब हम समाज पर नज़र डालते हैं तो चौदह सौ साल पहले का वह जमा-न-ए- जाहिलियत हमें याद आता है जब ज़िल्लत और अपमान से बचने के लिये निर्दोष बच्चियों को जिन्दा दफन कर दिया जाता था। अधिकतर मां बाप बड़े शौक़ से लड़की को बड़ी मेहनत व मशक़्क़त से पालते हैं, उन्हें शिक्षा देते हैं, कुछ नहीं तो कम से कम कोई हुनर ज़रूर सिखा देते हैं। जब शादी के लायक़ हो जाती हैं तो उसके सामने जहेज़ (दहेज) जैसी मुसीबत सामने आ जाती है। दहेज़ का इस्लाम धर्म से कोई संबन्ध नहीं है बल्कि यह दूसरों की रस्म है जिस की पैरवी हमारे मुसलमान भाई कर रहे हैं और इस्लाम के अनमोल क़ानून वरासत से बेटी को महरूम कर देते हैं।

कहते हैं सभी लोग कि लानत जहेज़ है

फिर भी तलाश करते हैं रिश्ता जहेज़ का

जब कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि जिस ने दूसरी क़ौम का तरीक़ा अपनाया तो वह उन्हीं में से है। (अबू दाऊद)

फरमायाः निकाह मेरी सुन्नत है जिसने मेरे तरीके से मुंह मोड़ा तो वह मुझमें से नहीं है'' (मिश्कात, रिवायत हज़रत आइशा-१२५)

बाज़ लोग दलील देते हैं कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने अपनी लाडली चहेती बेटी हज़रत फातिमा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा को जहेज़ दिया था इसलिये दहेज़ देने में कोई हर्ज नहीं है। यह गलत फहमी है। आपको मालूम होना चाहिए कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की चार बेटियां थीं। फातिमा, ज़ैनब, रूकैया, उम्मे कुलसूम रज़िअल्लाहो तआला अन्हुम, फातिमा को छोड़कर तीनों बेटियों को अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने जहेज़ नहीं दिया। नबी स०अ०व० ने बचपन ही से हज़रत अली को अपनी किफालत (भरण पोषण) में ले रखा था और हर तरह इनकी देख भाल करते थे। हजूर स०अ०व० ने घर बसाने के लिये हज़रत अली को कुछ सामान दिया था जिसके बारे में हज़रत अली खुद फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा को जहेज़ में एक चादर, चमड़े का एक मश्कीज़ा और एक तकिया दिया था जिसमें इज़ख़िर घास भरी हुई थी।

हफीज़ जालनधरी ने अपनी शायरी में इसको इस तरह बयान किया है।

जहेज़ उनको मिला जो कुछ शहनशाहे दो अलाम से, मिला है दर्स उनको सादगी का फख़रे आदम से, अक़्ले दुनयवी जो हिस्सा जोहरा में आई थी, ख़जूर खुर्दरी से बान एक चारपाई थी, मशक़्क़त उम्र भर करना लिखा था जो मुक़ददर में, मिली थीं चक्कियां दो ताकि आटा पीस लें घर में, घड़े मिटटी के दो थे एक चमड़े का गद्दा था, न ऐसा खुश्नुमा न बदज़ेब और भददा था, भरे थे उसमें रूई की जगह पत्ते खुजूरों के, यह वह सामान था जिन पे जान व दिल कुर्बान हूरों के।

जहेज़ देना रसूल स०अ०व० की सुन्नत नहीं है और यह सुन्नत होता तो आप अपनी दूसरी लड़कियों को भी इससे महरूम (वंचित) नहीं करते और इस तरह की बात भी सहाबा किराम रिजवानुल्लाही अलैहिम अजमईन की ज़िन्दगी में भी नहीं मिलती है जिससे मालूम हुआ जहेज़ देना रसूल स० की सुन्नत नहीं।

इस्लाम में जानवरों के अधिकार

मौलाना कलीमुल्लाह उमरी मदनी

इस्लाम दीने रहमत है, उसकी रहमत इन्सान की हद तक सीमित नहीं है बल्कि हर जानदार के लिये है। उसकी रहमत (दया, करूणा) ने मानवता को लाभान्वित करने के साथ साथ जानवरों को भी अपनी असीमित रहमत से मालामाल किया है। इस्लाम से पहले अरबों की सख्त दिली और उनके जुल्म का निशाना इन्सान के अलावा जानवर भी बनते थे वह कई तरीके से जानवरों को दुख देते और उन पर जुल्म ढ़ाते थे। जानवरों को अंधाधुंध मारना फिर लोगों को खाने की दावत देना उनके दानशीलता की पहचान थी, उनके यहां ज्यादा से ज्यादा जानवरों को जबह करने के मामले में मुकाबले हुआ करते थे, जिसमें दोनों पक्ष बारी बारी ऊंट ज़बह करते थे जो रूक जाता या जिसके ऊंट खत्म हो जाते वह बाज़ी हार जाता था। एक तरीका यह भी था कि कोई शख्स मर जाता तो उसकी सवारी के जानवरों को उसकी कब्र पर भूखा प्यासा बांध दिया जाता था। उनके लिये न चारे का इन्तेज़ाम किया जाता और न पानी का इसी हालत में वह जानवर सूख कर मर जाते थे। यह और इस तरह के दसयों जुल्म और क्रूरता का व्यवहार जमान-ए जाहिलियत में (इस्लाम धर्म के आने से पहले) किये जाते थे इस्लाम आया तो उसने जाहिलियत के इन सारे खुराफात और अत्याचार को खत्म करने का हुक्म दिया कि जानवरों के साथ बेहतर व्यवहार किया जाये। बेजुबान जानवर इन्सान के अच्छे बर्ताव के पात्र हैं।

आप स०अ०व० ने फरमायाः जो मुसलमान पेड़ लगाता है, या खेती बाड़ी करता है और उसको चिडिया या इन्सान या कोई जानवर खाता है तो यह सदका (सवाब) का काम है। (मुस्लिम)

इतना ही नहीं बल्कि जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार पर सवाब की खुशखबरी सुनाई गयी है। सुनन इब्ने माजा की हदीस है एक सहाबी रसूल स०अ०व० से पूछते हैं कि मैंने अपने ऊंटों के लिए एक हौज़ बना रखा है, कभी कभार उस पर भूले भटके जानवर भी आ जाते हैं अगर मैं उन्हें पिला दूं तो क्या इस पर भी मुझे सवाब मिले गा? आप स०अ०व० ने फरमाया हर प्यासे या जानदार के साथ अच्छा व्यवहार करने से सवाब मिलता है। (इब्ने माजा ३६८६)

हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है जिसमें नबी स०अ०व० ने एक शख्स का वाक्या बयान किया है, जो प्यास की वजह से परेशान हो रहा था वह एक कुवें से पानी पीकर निकला ही था कि वह देख रहा है कि एक कुत्ता का प्यास से वैसे की बुरा हाल है जैसे कि उसका था और वह कीचड़ को चाट चाट कर अपनी प्यास बुझा रहा है। वह शख्स कुवें में दुबारा उतर कर पानी भर लाता है और कुत्ते को पिला देता है। अल्लाह को इस शख्स का यह नेक काम पसन्द आ गया और उसकी मग्फिरत कर दी। इस वाक्ये को सुनकर सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने में सवाब है। (बुखारी-६००८ अबू दावूद २५५०)

इस्लाम ने जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने की जो शिक्षा दी है और उनके जो अधिकार बयान किये हैं उनका निम्न में यहां जिक्र किया जा रहा है।

जानवरों को सताया न जाये

इस्लाम ने जानवरों को भी चैन से जीने का हक दिया है उसकी उसूली तालीम यह है कि न खुद

तकलीफ उठाओ और न दूसरों को तकलीफ पहुंचाओ (इब्ने माजा ३४०) दूसरों को तकलीफ देना अगर्चे वह जानवर ही क्यों न हो इस्लाम के नजदीक दुरूस्त नहीं है। हज़रत रबी बिन मस्ऊद रजिअल्लाहो फरमाते हैं कि एक सफर में हम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। आप हाजत के लिये चले गये हमने एक लाल पक्षी को देखा जिसके साथ उसके दो बच्चे भी थे हमने इन बच्चों को पकड़ लिया तो वह पक्षी दुख के मारे उन बच्चों के पास मंडलाने लगा, इतने में नबी स०अ०व० भी आ पहुंचे तो आपने फरमायाः इस पक्षी से उसके बच्चों को छीन कर किसने दुख पहुचाया है, उसके बच्चों को लौटा दो। (अबू दावूद २६७३)

जानवरों को दुख पहुंचाना तो दूर की बात है उन्हें लानत मलामत करने से भी इस्लाम ने मना किया है। हज़रत इमाम बिन हुसैन से रिवायत है कि एक बार रसूल स०अ०व० सफर में थे। एक अन्सारी औरत ऊंटनी पर सवार ऊंटनी से ऊब गयी थी तो उसने उस पर लानत की। रसूल स०अ०व० ने जब सुना तो फरमायाः इस ऊंटनी पर जो सामान लदा हुआ है वह उतार लो और इसे (इसके बदले में आज़ाद) छोड़ दो इस लिये कि इस पर लानत की गयी है। हज़रत इमाम फरमाते हैं कि मैं अब भी इस ऊंटनी को देख रहा हूं, वह लोगों के बीच चल रही है कोई उसको रोक नहीं रहा है। (मुस्लिम ६६०४)

इस हदीस की व्याख्या में हाफिज़ सलाहुददीन यूसुफ लिखते हैं इससे मालूम हुआ कि तंगदिल होकर इन्सानों को तो दूर की बात जानवरों को भी बददुआ देना और उन पर लानत करना जाइज़ नहीं है। (रियाजुस्सालिहीन ३४४/२)

कुछ रिवायतों से यह भी मालूम होता है कि जो जानवर इन्सानों को भाइदा पहुचाता है उसकी कद्र करनी चाहिये जैसा कि जैद बिन खालिद जोहनी रजिअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया मुर्ग को बुरा भला न कहो, क्योंकि वह सुबह सवैरे अपनी आवाज़ के जरिये तुम्हें बेदार करता है। (मुस्नद अहमद १४२/५ ४/११५)

जो जानवर जिस काम के लिये पैदा किया गया है उससे वही काम लिया जाये।

जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार और इन्साफ यह है कि अल्लाह ने जिस जानवर को जिस काम के लिये पैदा किया है उससे वही काम लिया जाये। अगर कोई उससे दूसरा काम लेता है तो यह उसके साथ जुल्म है मिसाल के तौर पर अल्लाह ने बैल को खेती बाड़ी के लिये पैदा किया है, अगर कोई उससे गदधे की तरह बोझ ढ़ोने का काम लेता है तो इस्लाम के नजदीक यह जुल्म है।

एक बार रसूल स०अ०व० ने फरमायाः अपने जानवरों की पीठ को मिंबर न बनाओ जानवर से स्टेज का काम न लो। अल्लाह ने उन्हें तुम्हारा फरमांबरदार सिर्फ इसलिये बनाया है कि वह तुमको ऐसी जगहों पर आसानी से पहुंचा दे जहां तुम बड़ी कठिनाई के बाद पहुंच सकते थे तुम्हारे लिये अल्लाह ने जमीन को पैदा किया है, अपनी ज़रूरतें उससे पूरी करो। (अबू दावूद २५६७)

आप से यह भी बयान किया गया है कि एक शख्स बैल से सवारी का काम ले रहा था अल्लाह की कुदरते खास से उसे बोलने की क्षमता मिल गयी तो उस बैल ने कहा मुझे इस काम के लिये नहीं पैदा किया गया।

जानवरों के आराम का ख्याल रखा जाये जिन जानवरों से काम किया जाता है या जिन से लाभ उठाया जाता है उनके बारे में इस्लाम की तालीम यह है कि उनके आराम व राहत का पूरा पूरा ख्याल रखा जाये, उन्हें वक्त पर खिलाया जाये, अगर वह बीमार हो तो उनका एलाज कराया जाये, उनके दुख की हालत में काम न लिया जाये, उनके रहने सहने का उचित प्रबन्ध किया

जाये और उनसे उतना ही काम किया जाये जितना वह सह सकें, उनसे उस वक्त तक काम लेना जब तक कि वह बुरी तरह थक हार कर आगे काम करने के लायक न रह जायें या उनकी हालत दयनीय हो जाने के बावजूद मारमार कर उनसे काम लेना, या उन्हें भूखा प्यासा रख कर काम लेना जुल्म है। आप स०अ०व० ने फरमाया अगर हरयाली वाली जमीन से गुजर हो तो अपनी सवारी को धीरे चलाओ और जानवर को उससे भाइदा उठाने का मौका दो और अकाल का मौसमहो तो तेज तेज चलाओ ताकि वह अपनी मंजिल पर जल्द पहुंचे और उसे खाने पीने का और आराम का मौका मिले। अबू दावूद २५६६

एक बार आप स०अ०व० एक अन्सारी के बाग में इंसानी जरूरत के लिये गये, उसमें एक ऊंट था जो आपको देखर चीखा और रोने लगा मुहम्मद स०अ०व० उस के पास गये, उसकी कन्पटी पर हाथ रखा और वहां के लोगों से पूछा यह किस का ऊंट है? एक अन्सारी नौजवान ने आगे बढ़कर कहा मेरा है। आपने कहा क्या इस जानवर के बारे में अल्लाह से डरते नहीं जिस का अल्लाह ने मालिक तुम्हकें मालिक तुम्हें बनाया है? इस ऊंट ने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और इस पर सख्ती करते हो अबू दावूद २५४६

एक मौके पर आपने एक ऊंट को देखा उसकी पीठ उसके पेट से लगी हुयी ïïी उसको खूब भूख लगी हुयी थी आपने कहा इन बेजुबान जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो, उन पर ऐसी हालत में सवारी करो जब वह सवारी के काबिल और सेहत मन्द र्हें और उन्हें अच्छी हालत में थक कर चूर होने से पहले छोड़ दो। अबू दावूद २५४८

किसी जानवर को भूखा न रखा जाये जिस तरह अपने मातहत काम करने वाले इन्सानों को भूखा रखना गुनाह है इसी तरह जानवरों को भूखा प्यासा रखना गुनाह है और यह क्रूरता इन्सान को जहन्नम में पहुंचा सकती है जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमायाः एक औरत एक बिल्ली की वजह से जहन्नम में डाल दी गयी उसने उसे बांध रखा था न तोउसने उसे खाने को दिया और न आजाद छोड़ा ताकि यह चल फिर कर जमीन के कीड़े मकूड़ों में से कुछ खा लेती। मुस्लिम ६७५

अर्बों की सख्त दिली की हद हो गयी थी कि वह जिन्दा जानवर के शरीर का मनपसन्द हिस्सा काट कर खा लिया करते थे आपने इससे सख्ती से मना किया इस तरीके से कि ''जिन्दा जानवरों का जो गोश्त काट कर खाया जाता है वह मुर्दार है'' (तिर्मिज़ी-१४८०) इसी तरह जानवरों का मुस्ला (उनके शरीर के किसी भाग को काटने से) मना फरमाया और ऐसा करने वाले पर लानत भेजी। (बुखारी ५५१५)

जानवरों को निशाना बाजी के लिये इस्तेमाल न किया जायेः किसी जानवर को निशाना बाज़ी के लिये इस्तेमाल करने या उसे बांध कर निशाना बनाने से इस्लाम ने सख्ती से रोका है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया ''तुम किसी जानवर को हर्गिज़ निशाना न बनाओ एक दूसरी रिवायत में है रसूल स०अ०व० ने जानवरों को बांध कर मारने से मना फरमाया है। (मुस्लिम ५०५७)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बयान करते हैं कि उन्होंने एक बार देखा कि कुछ लड़के मुर्गी को बांध कर तीर से निशाना बना रहे हैं। उन्होंने आगे बढ़कर रस्सी खोली और मुर्गी के साथ उस लड़के को पकड़ कर उसके घर वालों के पास पहुंचे और उनसे कहा अपने बच्चे को इस तरह की बेरहम हरकत से रोको क्योंकि रसूल स०अ०व० ने इस तरीके से किसी भी जानवर या जानदार को निशाना बनाने से मना

किया है। (बुखारी-५५१४)

किसी जानदार के चेहरे पर न मारा जाये और न उसको दागा जाये।

चेहरा शरीर का कमज़ोर और संवेदनशील जगह है इस भाग को मामूली चोट भी बेहद तकलीफ देह होती है। अरब वाले चौपायों के चेहरों पर दाग़ लगाते थे और कभी कभार चेहरों पर मार भी दिया करते थे। अल्लाह के रसूल ने इस क्रूरता को देखा तो सख्ती से रोका।

हज़रत जाबिर फरमाते हैं कि रसूल स०अ०व० ने चेहरे पर मारने और उसे दाग देने से सख्ती से मना किया है। (मुस्लिम ५५५१) हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम स०अ०व० का गुजर एक गदधे के पास से हुआ, जिसके चेहरे को दाग दिया गया था आपने देखा तो फरमाया उस शख्स पर अल्लाह की लानत हो जिसने उसे दागा है। (मुस्लिम ५५५२)

किसी जानवर को आग में न जलाया जायेः एक बार आप स०अ०व० सहाबए किराम के साथ सफर में पड़ाव में थे, आप ज़रूरत के लिये कहीं चले गये थे, जब वापस आये तो देखा कि एक साहब ने अपना चूलहा एक ऐसी जगह जला दिया है जहां जमीन में (या पेड़ पर) चूंटियों का बिल था। यह देख कर आप स०अ०व० ने पूछाः यह चूलहा यहां किसने जलाया है। एक साहब ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैंने। आप स०अ०व० ने फरमायाः इसे बुझाओ, इसे बुझाओ। (अबू दावूद २६७५) मकसद यह था कि इन चूंटियों को दुख न हो और कहीं वह आग से जल न जायें।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद बयान करते हैं कि एक सफर में आपने चूंटियों का एक बिल जिसे हमने जला दिया था, देखकर पूछा यह हरकत किसने की है, हमने जवाब दिया कि हमने यह काम किया है। आप स०अ०व० ने फरमाया किसी जानवर को आग की सजा देने का हक केवल सृष्टिकर्ता (उसके पैदा करने वाले) को है। (बुखारी ३०१६)

जानवरों को एक दूसरे से लड़ाया न जायेः अरबों का एक दिलचस्प काम यह था कि वह जानवरों को आपस में लड़ाते और इस तमाशे से खुश होते थे। इस खेल में जानवर घायल हो कर बेहद तकलीफ उठाते थे। रसूल स०अ०व० ने जब इस अमानवीय काम को देखा तो सख्ती के साथ रोका। (अबू दाऊद २५६२)

इस्लाम में जानवरों के अधिकार के बारे में यह स्पष्ट तालीमात हैं जिनसे यह हकीक़त स्पष्ट हो गयी कि इस्लाम ने जानवरों को कितने सम्मान की निगाह से देखा है। मौलाना सैयद सुलैमान नदवी के अनुसार इन शिक्षाओं से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि इस्लाम के सीने में जो दिल है वह कितना नर्म और कितना रहम व मेहरबानी से भरा हुआ है।

दुनिया को सबसे पहले जानवरों के अधिकार से आगाह करने वाला इस्लाम ही था वर्ना इससे पहले जानवरों के अधिकार की कल्पना ही दुनिया में मौजूद नहीं थी, हो भी कैसे सकता था? जिस दुनिया में मानव अधिकार के लाले पड़े हों वहां जानवरों के अधिकार का तसव्वुर ही असंभव था?

वह लोग जो इस्लाम को खून चूसने वाला मजहब कहते हैं इन शिक्षाओं की रोशनी में जरा दिल थाम कर बतायें कि उनके दावे में कितनी सच्चाई है। इस्लाम ने जानवरों को जो अधिकार दिये हैं क्या सभ्य दुनिया ने इन अधिकारों का पात्र इन्सान को भी समझा है? हालात गवाह हैं कि आज आधुनिक सभ्यता और तथाकथित मानव अधिकार के झण्डावाहकों ने इन्सान की हालत जानवरों से भी बदतर बना रखी है। **(जरीदा तर्जुमान १५-३० जून २०१३)** ❑ ❑ ❑

इस्लाम की खूबियाँ

अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मोताज़

इस्लाम की खूबी यह भी है कि यह तमाम मुसलमानों को आदेश देता है कि वह तमाम ईश्दूतों पैग़म्बरों पर ईमान लाएं उनके बीच अन्तर न करें, उनसे प्रेम करें, इसी तरह से यह हुक्म भी है कि वह तमाम आसमानी किताबों पर भी विश्वास रखें क्योंकि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से पहले जितने पैगम्बर थे वह एक तय समय और एक ख़ास कौम के लिये भेजे गये थे, उनकी क़ौमों ने आसमानी किताबों में रदद व बदल भी कर दिया था लेकिन इस्लाम पूरी दुनिया के लिये आया है। हज़रत मुहम्मद पूरी दुनिया के लिये पैगम्बर (ईश्दूत) बना कर भेजे गये हैं। आप के पैगम्बर बना कर दुनिया में भेजे जाने की ख़बर आप से पहले के पैगम्बरों ने भी दी है लेकिन अब हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के बाद कोई दूसरा नबी या रसूल नहीं आएगा। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''जो शख्स इस्लाम के सिवा और दीन तलाश करे, उसका दीन क़बूल न किया जाएगा और वह आख़िरत में नुक़सान पाने वालों में होगा।'' (सूरे आल इमरान-८५)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''आज मैं (अल्लाह) ने तुम्हारे लिये दीन को कामिल कर दिया और तुम पर अपना इंआम भरपूर कर दिया और तुम्हारे लिये इस्लाम के दीन होने पर रिज़ामन्द हो गया'' (सूरे माइदा-३)

इस्लाम की खूबी यह भी है कि वह अक़ीद-ए-ए तौहीद अर्थात एक अल्लाह की इबादत एवं उपासना की तरफ बुलाता है कि पूरी दुनिया का उपास्य एक है उसका कोई शरीक व साझी नहीं। वही पैदा करने वाला हे, वही रोज़ी देने वाला है, वही सर्वशक्तिमान है, वही ज़िन्दगी देने वाला है वही मौत देने वाला है।

इस्लाम की एक खूबी यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल किया गया कुरआन अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है कुरआन की बातें सत्य हैं कोई भी इन्सान कुरआन के समान नहीं ला सकता यहां तक कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० भी स्वयं अपनी तरफ से कुरआन के समान लाने से क़ासिर हैं। कुरआन ने सच्चाई और शुचिता एवं पवित्रता का आदेश दिया है। न्याय, ईमानदारी यतीमों के साथ अच्छा व्यवहार, मिस्कीनों पर दया व करूणा, बड़ों की इज्ज़त महमान और पड़ोसी की इज्ज़त यह सब कुरआन की पवित्र शिक्षाएं हैं पवित्र चीज़ों से लाभ उठाने का हुक्म दिया है लेकिन बेजा और फुज़ूल ख़र्च से रोका भी है नेकी और परहेज़गारी का हुक्म दिया है, अश्लीलता, बुरी बातों और अत्याचार से रोका है।

इस्लाम सुलह, अम्न व शान्ति और प्यार मुहब्बत की दावत देता है, आपसी झगड़े और गुटबाज़ी से रोकता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''तुम सब अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से

पकड़ लो और फिरक़ा बन्दी न करो'' (सूरे आल इमरान-१०३)

इस्लाम ने अत्याचार से रोका है सबके साथ न्याय का हुक्म दिया है। ख्यानत और धोका देही से मना किया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''बेशक वह ख्यानत करने वाले को पसन्द नहीं करता है''। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और अगर वह सुलेह की तरफ मायल हों तो तुम भी सुलेह की तरफ मायल हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा करो यक़ीनन वह सुनने वाला और जानने वाला है'' (सूरे अंफाल-६१)

इस्लाम ने इन्साफ का हुक्म दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की ख़ातिर हक़ पर क़ाइम हो जाओ, रास्ती और इन्साफ के साथ गवाही देने वाले बन जाओ, किसी कौम की अदावत तुम्हें इन्साफ के खिलाफ न आमादा कर दे। इन्साफ किया करो जो परहेज़ गारी के ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरते रहो यक़ीन मानो कि अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से बाख़बर है'' (सूरे माइदा-८)

इस्लाम ने मआफ करने का आदेश दिया। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और यह कि तुम मआफ कर दिया करो यह तक़्वा के ज़्यादा क़रीब है'' (सूरे बक़रा-२३७)

इस्लाम की खूबी यह भी है कि वह सभी इन्सानों को पवित्र और साफ सुथरा रहने का हुक्म देता है। वह दूसरों के ऐब को छुपाने का हुक्म देता है, बड़ों की इ़ज़्ज़त करने, छोटों पर दया करने और अनाप शनाप बोलने से मना किया है।

इस्लाम ने इस बात से मना किया है कि जब तीन आदमी हों तो एक आदमी को छोड़ कर दो लोग आपस में गुप चुप न करें क्योंकि इससे तीसरे को तकलीफ पहुंचती है। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि जब तुम तीन आदमी हो तो तीसरे को छोड़ कर दो व्यक्ति सरगोशी न करो यहां तक कि तुम लोगों में मिल जाओ क्योंकि इससे उसको (तीसरे व्यक्ति को तकलीफ पहुंचती है।)

इस्लाम ने इस बात से भी मना किया है कि इन्सान बेकार चीज़ों में अपना वक़्त बर्बाद करे। रास्तों में बैठने से रोका है, निगाहों को नीचा रखने का हुक्म दिया है, रास्ते से दुख पहुंचाने वाली चीज़ें को हटाना, मोहताजों की मदद करना, मज़लूम की मदद करना यह सब इस्लाम की खूबियों में से है। बुरे कामों से रोका है भलाई करने का हुक्म दिया है जालिम को अत्याचार से रोकता है, न्याय की शिक्षा दी है। माल, जायदाद और इ़ज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त करने का हुक्म दिया है।

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसने अपने भाई की इ़ज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त की अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उसको जहन्नम से दूर कर दे गा। इसको तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

इस्लाम की खूबी यह भी है कि वह मध्य मार्ग को अपनाने पर जोर देता है और अपने अनुयाइयों को बुराई से दूर रहने और भलाई का हुक्म देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये पैदा किये गये हो, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और

अल्लाह पर ईमान रखते हो। (सूरे आल इमरान-११०)

इस्लाम की खूबियों में से एक खूबी यह भी है कि वह यतीमों (अनाथों) का भरण पोषण करता है और सेवकों को उनका पूरा पूरा अधिकार देता है। गरीबों मोहताजों कमजोरों और पिछड़े लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करेन, उनके साथ नर्मी का मामला करने का हुक्म देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''पस यतीम पर सख्ती न करो और मांगने वालों को डांट डपट न करो''।

इस्लाम की एक खूबी यही भी है कि उसने जानवरों को सज़ा देने और मारने से सख़्ती से रोका है। सहीह मुस्लिम की रिवायत में है कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० का गुजर एक ऐसे गदधे के पास से दुआ जिस का चेहरा दाग दिया गया था आप ने गदधे को देख कर फरमाया अल्लाह की लानत (धिक्कार) हो उस व्यक्ति पर जिसने इस जानवर को दागा है।

इस्लाम की एक खूबी यह है कि वह औरत की इज़्ज़त करने की शिक्षा और उसको पूरा पूरा अधिकार देता है और शौहर पर यह जिम्मेदारी डाली है कि वह अपनी पतनी की आवश्यकताओं का पूरा ख्याल रखे, उसका महर अदा करे, उसको वरासत में हक़ दे, उसके साथ अच्छा व्यवहार करे, उसके साथ न्याय का मामला करो, इस्लाम ने औरत के हर नेक काम का पूरा पूरा बदला देने का वादा किया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ईमान की हालत में मर्द और औरत में से जो भी नेक कर्म करे तो हम ज़रूर पाक़ीज़ा जिन्दगी प्रदान करेंगे और हम उनको उनके अच्छे कर्मों का बदला अवश्य देंगे'' (सूरे नहल-६७)

इस्लाम की नज़र में सबसे अच्छा इन्सान वह है जो औरतों की इज्ज़त करता है, और सबसे बुरा शख्स वह है जो औरत का अपमान करता है।

इस्लाम की खूबी यह भी है कि वह खुराफात को मिटाता है।

जादूगरी, शराब नोशी, सटटे बाज़ी, बेवफाई, झूठ फरेब छल कपट से दूर रहने का आदेश देता है। इस्लाम ने (मुनाफिक) कपटाचारी की पहचान यह बताई है कि जब वह बात कहे तो झूठ बोले, जब वादा करे तो उसको पूरा न करे और जब उसके पास अमानत रखी जाए तो उसमें ख्यानत करे और जब झगड़ा करे तो गाली गुलूच और अनाप शनाप बोले। इसी लिये कुरआन ने इन्सान को वादा निभाने और वचन तोड़ने से बचने का हुक्म दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ऐ ईमान वालो तुम वचन व संधि को पूरा करो'' (सूरे माइदा-१)

इस्लाम अच्छे कर्म की प्रेरणा देता है और सुस्ती व काहिली से बचाता है, कर्म चाहे दुनिया के लिये हो या आखिरत के लिये, इस्लाम इसे इबादत क़रार देता है शर्त यह है कि बन्दे का कर्म अल्लाह की ख़ुशी के लिये हो।

इस्लाम रिश्वत, धोकाधड़ी और फुज़ूल खर्ची से मना करता है। हज़रत मुहम्मद ने फरमायाः अल्लाह ने रिश्वत लेने वाले और देने वाले दोनों पर लानत (धिक्कार) भेजी है और उस दलाल पर भी लनानत भेजी है जो रिश्वत देने और लेने वाले के बीच काम करता है।

नेकी का फल

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक बार रसूल स०अ०व० ने पिछली उम्मत के तीन आदमियों का एक वाक्या सुनाया। हदीस की किताबों में यह वाक्या इस तरह बयान किया गया है। पिछली उम्मत में तीन आदमी सफर पर निकले थे पनाह लेने के लिये रात बिताने के लिये एक गार (गुफ़ा) में चले गये। रात में चटटान खिसकने की वजह से गुफ़ा का दहाना बन्द हो गया। सुबह जब तीनों उठे तो देखा कि गुफ़ा से निकलने का रास्ता तो बन्द हो गया है। इन तीनों आदमियों ने आपस में कहा कि सब लोग अपने पिछले नेक कर्मों का हवाला देकर अल्लाह से दुआ करें। उनमें से एक मुसाफिर (यात्री) ने कहा कि ऐ अल्लाह तू तो जानता है कि मेरे पास बूढ़े मां बाप थे मैं उनका इतना ख्याल करता था कि मैं उन्हें शाम को सबसे पहले दूध ा पिलाया करता था, पहले मां बाप को पिलाता था फिर बीवी बच्चों और गुलाम को। एक दिन चारे की तलाश में दूर निकल गया जिसकी वजह से घर पहुंचने में देर हो गयी, मेरे घर पहुंचते पहुंचते मां बाप सो गये थे, मैंने दूध निकाल कर ले जाकर उनके सिरहाने खड़ा रहा मैंने उनको केवल इसलिये नहीं जगाया कि उनकी नींद टूट जाये गी। मैं सुबह तक दूध पिलाने के लिये खड़ा रहा और हमारे बच्चे भूख से बिलकते रहे। जब मेरे मां बाप ने दूध पी लिया फिर अपने बच्चों को पिलाया। ऐ अल्लाह अगर मेरा यह कर्म तेरी खुशी के लिये है तो चटटान को गुफ़ा के दहाने से हटा दे ताकि हम लोगों को इस मुसीबत से छुटकारा मिल जाये। इस के बाद वह चटटान थोड़ी सी खिसक गयी। दूसरे मुसाफिर ने कहा ऐ अल्लाह तू जानता है मेरे चचा की लड़की थी जो मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द थी मैंने उससे शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिये बहलाया फुसलाया लेकिन वह तैयार नहीं हुयी लेकिन एक बार वह और उस का पूरा खानदान अकाल का शिकार हो गया। मदद के लिये मेरे पास आयी। मैंने उसको १२० दीनार इस शर्त पर दिया कि वह मुझे अपने पास अकेले में आने का अवसर देगी। चचा की लड़की मजबूरन तैयार हो गयी। जब मिलने का समय करीब आ गया तो चचा की लड़की ने कहा ऐ अल्लाह के बन्दे अपने रब से डर। ऐ अल्लाह मैं तेरे भय से अवैध सम्बन्ध बनाने से पीछे हट गया। अपनी चचाजाद बहन को जो कुछ भी दिया था उसको वापस भी नहीं लिया। ऐ अल्लाह अगर यह काम मैंने तेरी खुशी के लिये किया है तो इस मुसीबत से हम लोगों को निकाल दे। चटटान फिर थोड़ी से खिसक गयी।

तीसरे मुसाफिर ने कहा कि ऐ अल्लाह तू तो जानता है कि मैंने कुछ मजदूरों को काम पर लगाया था, सबको मजदूरी भी दे दी थी केवल एक मजदूर अपनी मजदूरी नहीं ले सका था। मैंने इस मजदूर की रकम को कारोबार में लगा दिया था उसकी रकम से कारोबार में खूब तरक्की हुयी। एक दिन वह मजदूर आ धमका। उस मजदूर ने अपनी मजदूरी की मांग की मैंने कहा यह ऊंट गाय, बकरियां गुलाम सब तुम्हारे हैं। उस मजदूर ने कहा मुझसे मजाक न करो। मैंने कहा कि यह सब माल तुम्हारी मजदूरी का फल है। वह मजदूर अपने पूरे माल को लेकर चला गया। ऐ अल्लाह अगर यह कर्म मैंने तेरी खुशी के लिये की है तो इस मुसीबत को हटा दे। इसके बाद गुफ़ा से पूरी चटटान हट गयी और तीनों मुसाफिर गुफ़ा से बाहर निकल आये।

अगर हमारे काम में किसी तरह का दिखावा नहीं होगा, जो भी कर्म करेंगे अल्लाह की खुशी के लिये करेंगे तो हमारे अच्छे कर्म मुसीबत में हमारा साथ देंगे।

नेकी का फल

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक बार रसूल स0अ0व0 ने पिछली उम्मत के तीन आदमियों का एक वाक्या सुनाया। हदीस की किताबों में यह वाक्या इस तरह बयान किया गया है। पिछली उम्मत में तीन आदमी सफर पर निकले थे पनाह लेने के लिये रात बिताने के लिये एक गार (गुफा) में चले गये। रात में चटटान खिसकने की वजह से गुफा का दहाना बन्द हो गया। सुबह जब तीनों उठे तो देखा कि गुफा से निकलने का रास्ता तो बन्द हो गया है। इन तीनों आदमियों ने आपस में कहा कि सब लोग अपने पिछले नेक कर्मों का हवाला देकर अल्लाह से दुआ करें। उनमें से एक मुसाफिर (यात्री) ने कहा कि ऐ अल्लाह तू तो जानता है कि मेरे पास बूढ़े मां बाप थे मैं उनका इतना ख्याल करता था कि मैं उन्हें शाम को सबसे पहले दूध पिलाया करता था, पहले मां बाप को पिलाता था फिर बीवी बच्चों और गुलाम को। एक दिन चारे की तलाश में दूर निकल गया जिसकी वजह से घर पहुंचने में देर हो गयी, मेरे घर पहुंचते पहुंचते मां बाप सो गये थे, मैंने दूध निकाल कर ले जाकर उनके सिरहाने खड़ा रहा मैंने उनको केवल इसलिये नहीं जगाया कि उनकी नींद टूट जाये गी। मैं सुबह तक दूध पिलाने के लिये खड़ा रहा और हमारे बच्चे भूख से बिलकते रहे। जब मेरे मां बाप ने दूध पी लिया फिर अपने बच्चों को पिलाया। ऐ अल्लाह अगर मेरा यह कर्म तेरी खुशी के लिये है तो चटटान को गुफा के दहाने से हटा दे ताकि हम लोगों को इस मुसीबत से छुटकारा मिल जाये। इस के बाद वह चटटान थोड़ी सी खिसक गयी। दूसरे मुसाफिर ने कहा ऐ अल्लाह तू जानता है मेरे चचा की लड़की थी जो मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द थी मैंने उससे शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिये बहलाया फुसलाया लेकिन वह तैयार नहीं हुयी लेकिन एक बार वह और उस का पूरा खानदान अकाल का शिकार हो गया। मदद के लिये मेरे पास आयी। मैंने उसको 120 दीनार इस शर्त पर दिया कि वह मुझे अपने पास अकेले में आने का अवसर देगी। चचा की लड़की मजबूरन तैयार हो गयी। जब मिलने का समय करीब आ गया तो चचा की लड़की ने कहा ऐ अल्लाह के बन्दे अपने रब से डर। ऐ अल्लाह मैं तेरे भय से अवैध सम्बन्ध बनाने से पीछे हट गया। अपनी चचाजाद बहन को जो कुछ भी दिया था उसको वापस भी नहीं लिया। ऐ अल्लाह अगर यह काम मैंने तेरी खुशी के लिये किया है तो इस मुसीबत से हम लोगों को निकाल दे। चटटान फिर थोड़ी से खिसक गयी।

तीसरे मुसाफिर ने कहा कि ऐ अल्लाह तू तो जानता है कि मैंने कुछ मजदूरों को काम पर लगाया था, सबको मजदूरी भी दे दी थी केवल एक मजदूर अपनी मजदूरी नहीं ले सका था। मैंने इस मजदूर की रकम को कारोबार में लगा दिया था उसकी रकम से कारोबार में खूब तरक्की हुयी। एक दिन वह मजदूर आ धमका। उस मजदूर ने अपनी मजदूरी की मांग की मैंने कहा यह ऊंट गाय, बकरियां गुलाम सब तुम्हारे हैं। उस मजदूर ने कहा मुझसे मजाक न करो। मैंने कहा कि यह सब माल तुम्हारी मजदूरी का फल है। वह मजदूर अपने पूरे माल को लेकर चला गया। ऐ अल्लाह अगर यह कर्म मैंने तेरी खुशी के लिये की है तो इस मुसीबत को हटा दे। इसके बाद गुफा से पूरी चटटान हट गयी और तीनों मुसाफिर गुफा से बाहर निकल आये।

अगर हमारे काम में किसी तरह का दिखावा नहीं होगा, जो भी कर्म करेंगे अल्लाह की खुशी के लिये करेंगे तो हमारे अच्छे कर्म मुसीबत में हमारा साथ देंगे।

ISSN2393-8838
Date of Publishing 19th June Vol. No.30 Issue No.6
JUNE 2019
Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

''ज़माने की क़सम, बेशक इन्सान सरतासर (मुकम्मल तौर पर) घाटे में है, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अमल किए और जिन्होंने आपस में हक़ की वसिय्यत की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की'' (सूरे अस्र आयत न0 1–3)

1

यह अल्लाह की कारीगरी है

नौशाद अहमद

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: "फिर उस दिन तुम से ज़रूर नेमतों का सवाल होगा"

दुनिया की कुछ नेमतें ऐसी हैं जो मेहनत करके हासिल की जाती हैं और कुछ नेमतें ऐसी हैं जिनको अल्लाह ने स्वयं उसके वजूद में रख दी हैं। मिसाल के तौर पर आंख कान, दिल दिमाग वगैरह।

यह दुनिया इन्सान के लिये आज़माइश की जगह है यहाँ के कर्मों से इन्सान के बारे में आखिरत में यह तय होगा कि वह आख़िरत में सफल होगा या असफल होगा।

इस संसार का एक एक पल बड़ा क़ीमती है, इसलिये हमारा वक़्त आज़माइश से कामयाबी के साथ गुज़र जाने में ख़र्च होना चाहिये जो हमारे लिये आख़िरत में सफलता का माध्यम बने।

कुरआन में अल्लाह तआला ने वक़्त की अहमियत को उजागर करने के लिये ज़माने की क़सम खाई है। कुरआन के सूरे अस्र का अर्थ है।

"ज़माने की क़सम, बेशक इन्सान सरतासर (मुकम्मल तौर पर) घाटे में है, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अमल किए और जिन्होंने आपस में हक़ की वसिय्यत की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की" (सूरे अस्र आयत न0 1–3)

इस आयत में ज़माने का अर्थ यह है कि यह जो दिन रात का उलट फेर होता है रात और दिन आते जाते रहते हैं, कभी दिन बड़ा होता है कभी छोटा है कभी रात बड़ी होती है तो कभी छोटी होती है, यह सब इन्सान की कारीगरी नहीं बल्कि अल्लाह की ताक़त व शक्ति की कारीगरी है।

इन्सान के ख़सारे में होने का मतलब यह है कि जब तक इन्सान इस दुनिया में जीवित रहता है तो उसकी पूरी जिन्दगी भागदौड़ और सख़्त परिश्रम में गुज़र जाती है और अगर ऐसे इन्सान का कर्म भी अच्छा नहीं है तो फिर इस दुनिया से जाने के बाद वह नरक का ईंधन बन जाता है।

इन्सान को अक्ल जैसी बड़ी नेमत दी गई है, वह सत्य और असत्य को पहचान सकता है। अपनी क्षमता से यह परख सकता है कि कौन अच्छा है कौन बुरा है कुरआन ने सही और गलत के अन्तर को भली भाँति स्पष्ट कर दिया है। इसके बावजूद अगर इंसान अपनी कामयाबी का रास्ता न ढूंढ सके तो इससे बड़ी वक़्त और नेमत की नाकदरी क्या हो सकती है।

कुरआन की इस आयत में उस इन्सान को सफल क़रार दिया है जो हक़ के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करता है और दूसरों को हक़ पर जमे रहने का उपदेश देता है, लेकिन यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि कितने लोग ऐसे हैं जो सत्य को जानते हुए भी असत्य की तरफ भागते जा रहे हैं और उनकी अकल पर इतना पर्दा पड़ गया है कि वह सच्चाई को जानने के बावजूद महज़ अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये हर ऐसी हरकत का सहारा ले रहे हैं जो उन्हें सफलता की तरफ नहीं बल्कि असलफता और बर्बादी की तरफ ले जा रही है।

इसलाहे समाज
जून 2019 2

मासिक

इसलाहे समाज

जून 2019 वर्ष 30 अंक 6

शव्वालुल मुकर्रम 1440 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़्

❑ वार्षिक राशि	100 रुपये	
❑ प्रति कापी	10 रुपये	
❑ टोटल पेज	28	

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़्क़्

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	यह अल्लाह की कारीगरी है	2
2.	अल्लाह की रहमत से मायूस न हों	4
3.	क़ियामत के समय विश्व की दशा	6
4.	इस्लाम में मआफ करने की शिक्षा	8
5.	पब जी ऐप से बचाने की ज़रूरत	10
6.	बच्चों की तर्बियत में कोताही का सबब	11
7.	मरने के बाद क्या होगा?	12
8.	हज़रत मुहम्मद स० ने फरमाया	15
9.	इस्लाम का पैग़ाम इन्सानियत	17
10.	जहेज़ समाज की बड़ी समस्या	19
11.	इस्लाम में जानवरों के अधिकार	20
12.	इस्लाम की खूबियाँ	24
13.	नेकी का फल	27
14.	विज्ञापन	28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

अल्लाह की रहमत से मायूस न हों

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''तुम बेतहरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये पैदा की गई है कि तुम नेक बातों का हुक्म करते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो'' (सूरे आल इमरान-११०) कुरआन की इस आयत में मुसलमानों को बेहतरीन उम्मत क़रार दिया गया है और इसका सबब भी बयान किया गया है जिस का मतलब यह है कि अगर यह उम्मत इन विशिष्ट खूबियों से सुसज्जित रहेगी तो भलाई वाली उम्मत रहेगी वर्ना इस विशिष्टता से वंचित क़रार दी जा सकती है और उसका खोया हुआ मकाम व स्थान दुबारा मिल सकता है जिसके बारे में कुरआन ने भविष्यवाणी की है।

उम्मते मुस्लिमा पूरी मानवता के लिये भलाई और शुभचिंतक बन कर आई थी लेकिन अफसोसनाक बात यह है कि आज हम स्वयं फराइज़ और वाजिबात से दूर होते चले जा रहे हैं। इबादत का एहतमाम नहीं है, इबादत की रूहानियत का अभाव होता जा रहा है, इबादत की जगह हमारी जिन्दगी और समाज में खुराफात ने जगह बना ली है। आज हमारी हालत यह है कि हम दूसरों से भलाई की असीमित उम्मीद रखते हैं लेकिन हम फराइज़ व वाजिबात से इतने गाफिल हो गये हैं कि हमारे ज़ेहन से यह बिन्दु लगभग निकल चुका है कि दूसरों की अपेक्षा हमारी ज़िम्मेदारियां ज़्यादा हैं लेकिन हम अपने दायित्व से बिल्कुल बे परवाह हैं। नेकियां हैं लेकिन ऐसा लगता है कि हमारी नेकियां और अच्छाईयां हमसे बेज़ार हैं। बेज़ारी की एक छोटी सी दलील यह है कि रमज़ान के गुज़रने के बाद हम पहले के मुक़ाबले में अपने परवर दिगार से बहुत दूर हो गए। इबादत की सूरते हाल यह है कि ईद के दिन भी दुनियावी मसरूफ़ियात में इतना डूब जाते हैं कि ईदुल फित्र के दिन नमाज़ के वक़्त भी ईदगाह में हाज़िर नहीं हो पाते हैं।

इन्सान के लिये आख़िरी चीज़ उम्मीद है और उम्मीद का खत्म हो जाना बेज़ारी की इंतिहा है। उम्मीद खत्म हो जाने के बाद मायूसी बचती है जब कि अल्लाह ने क़ुरआन में कई स्थानों पर अपने बन्दों को मायूसी से बचने का उपदेश दिय है।

''(मेरी जानिब) से कह दो कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो जाओ। निसन्देह अल्लाह तआला सारे गुनाहों को मआफ कर देता है, वाक़ई वह बड़ी बख्शिश बड़ी रहमत वाला है'' (सूरे नूर-५३)

कुरआन में अल्लाह ने फरमायाः

''अल्लाह की रहमत से निराश न हो'' (सूरे यूनुस-८७)

इन्सान की गलत फहमी यह है कि वह सोचता है कि उसने अपनी ज़िन्दगी में गुनाह पर गुनाह किये, अल्लाह की नाफरमानियां की हैं, बन्दों के अधिकार और अल्लाह

के अधिकार को अदा करने में गैर ज़िम्मेदारी का सुबूत दिया है तो अल्लाह उसे क्यों मआफ करेगा लेकिन इन्सान की यह सोच सरासर गलत है। अल्लाह की रहमत बहुत विस्तृत (वसीअ) है वह अपने बन्दों से बेपनाह मुहब्बत करता है शर्त यह है कि बन्दा अपने गुनाहों से तौबा करके अल्लाह से लौ लगाए लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि अल्लाह की रहमत और मग्फिरत की उम्मीद पर गुनाह करता जाए अल्लाह के अहकाम व फराइज़ की परवाह न करे और अल्लाह की सीमाओं, फराइज़ और वाजिबात पर अमल न करे और यह सोचे कि अल्लाह तो हमें मआफ कर देगा। यह उम्मीद सरासर धोका है और हम गलत फहमी का शिकार हैं। यह इतना बड़ा धोका और उम्मीद के इतनी विपरीत चीज़ है कि अगर क़ौम वास्तव में इस सोच व फिक्र में लिप्त हो जाए तो वह बेजा और बेफायदा उम्मीद की दलदल में धंसती चली जाएगी। इसी बेजा उम्मीद का ही परिणाम है कि पूरी मानवता और मिल्लत धोका खाती चली जा रही है। कामयाबी के रास्ते से दूर होती चली जा रही है वह दिशाहीन का शिकार है उसे अपना मार्गदर्शक कुरआन व हदीस को समझने के बजाए एक निराधार चीज़ से उम्मीद लगाए बैठा है। ऐसी सूरत में उम्मते मुस्लिमा से क्या उम्मीद की जा सकती है कि वह मार्गदशन का कर्तव्य निभाएगी।

मुलकी और विश्व स्तर पर हालात बड़ी तेज़ी से बदल रहे हैं। इन हालात को अपने हक़ में साज़गार बनाने के लिये ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने परवरदिगार को पहचानें, इबादतों का एहतमाम करें, तिलावत करें, मसनून दुआएं पढ़ें, तौबा व इस्तेग़फार करें और अपने असलाफ की जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करें। अल्लाह से लौ लगाएं। नाउम्मीदी और मायूसी किसी भी मसले का हल नहीं है, मायूसी हमें नाकामी की तरफ ले जाती है, कठिनाइयों और मुश्किलों से घबराने के बजाए इसका समाधान ढूंढने की ज़रूरत है, दुनिया की कोई भी समस्या (मसला) ऐसा नहीं है जिसका समााान कुरआन व हदीस और हमारे असफलाफ ने पेश किया हो। शर्त यह है कि हम निःस्वार्थ, जज़्बा और ईमानदारी के साथ कुरआन व हदीस की तालीमात को अपनाएं। इस्लाम की सच्ची तालीमात को पूरी मानवता तक पहुंचाने का संकल्प करें और ऐसी फरेबी उम्मीद से बचें जो हमें महज़ धोका और अंधेरे में रखती है। खास तौर से दीन से दूर न हों, इन्सानियत के जौहर से खाली न हों, भलाई, स्रेष्टा और सृष्टि से दूर न हों, कर्म व कथन और आचरण से दूरी अल्लाह की रहमतों से बेज़ार और वंचित होने की अलामत और असल वजह है। इसलिये अल्लाह की रहमतें हर स्तर पर आर्थिक, राजनैतिक, दीनी, दुनियावी, इल्मी व तर्बियती और नैतिक हर एतबार से रूठती चली जा रही हैं। काश कि हम अल्लाह का होकर रहमतों का सज़ावार बन जाएं उसकी तरफ पलट कर उसके इंआम का उम्मीदवार बनकर और दीन अख़लाक बेज़ारी से छुटकारा हासिल करके कामयाब और सफल हो जाएं।

❑ ❑ ❑

क़ियामत के समय विश्व की दशा

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

जब क़ियामत आएगी यह ब्रहमांड तहस-नहस हो जाएगा। सूरज-चांद आपस में टकरा जाएंगे। पहाड़ रूई की तरह भागते फिरेंगे, कोई किसी का पूछनेवाला नहीं होगा। कुरआन में बड़े विस्तार के साथ इसका चित्र खींचा गया है।

सूर्च-चांद और तारों की दशाः

''जब सूर्य लपेट दिया जाएगा, जब तारे प्रकाशहीन हो जाएंगे, जब पर्वतों को चला दिया जाएगा, जब दस मास की गर्भवती ऊंटनियां छोड़ दी जाएंगी, जब जंगली जानवर घबराकर एकत्र हो जाएंगे, जब समुद्र उबल पड़ेंगे, जब लोगों को उनकी आत्माओं से जोड़ दिया जाएग जब जीवित गाड़ी गई कन्या से पूछा जाएगा कि उसकी हत्या किस गुनाह के कारण की गई, और जब कर्मपत्र खोल दिए जाएंगे, और जब आकाश की खाल उतार दी जाएगी, और जब नरक भड़काई जाएगी, और जब स्वर्ग निकट कर दिया जाएगा तो उस दिन प्रत्येक मनुष्य जान लेगा, जो कुछ वह लेकर आया है''। (सूरा-८१, अत तकवीर आयतें १-१४)

कुरआन में एक अन्य स्थान पर इसका वर्णन इस प्रकार हुआ है।

''वह पूछता है आखिर क़ियामत का दिन कब आएगा?'' (तो बता दो) जिस दिन आंखें पथरा जाएंगी तथा चांद प्रकाशहीन हो जाएगा और सूरज तथा चांद एकत्र कर दिए जाएंगे। उस दिन मनुष्य पुकारा उठेगा, ''आज शरण लेने का स्थान कहा है?'' कुछ नहीं उस दिन कोई शरणस्थल नहीं होगा। उस दिन तुम्हारे रब ही की ओर सबको जाकर ठहरना है। उस दिन मनुष्य को बता दिया जाएगा, जो कुछ उसने आगे बढ़ाया और पीछे टाला। (सूरा-७५, अल-क़ियामह, आयतें-६-१३)

अर्थात क़ियामत के दिन प्रत्येक व्यकित के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्म के अनुसार स्वर्ग या नरक में डाल दिया जाएगा। कुरआन में हैः

''जब आकाश फट पड़ेगा, और जब तारे बिखर पड़ेंगे, और जब समुद्र उबल पड़ेंगे, और जब क़ब्रों के अन्दर जो हैं उन्हें उठा दिया जाएगा, तब प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा जो कुछ उसने आगे भेजा और जो कुछ उसने पीछे छोड़ा हैं। ऐ मनुष्य, किस चीज़ ने तुम्हें अपने उदार 'रब' के विषय में धोखे में डाल रखा है, जिसने तुझे पैदा किया, और तुझे ठीक ठाक, और सन्तुलित बनाया। फिर जिस प्रकार के रूप में चाहा तुम्हें ढाल दिया, मगर तुम तो बदले के दिन (क़ियामत) को झुठलाते हो''(सूरा-८२ अल इन्फ़ितार, आयतें१-६)

पृथ्वी और आकाश की दशाः

कुरआन में है

''तथा उन लोगों ने अल्लाह का जैसा सम्मान करना चाहिए था, नहीं किया। क़ियामत के दिन सारी धरती उसकी मुटठी में होगी तथा आकाश उसके दाएं हाथ में लिपटे हुए होंगे। वह हर प्रकार के शिर्क (साझेदारी) से पवित्र और उच्च है''। (सूरा-३६, अज़ जुमर, आयत-६७)

''जब धरती भूकम्प से हिला दी जाएगी, और धरती अपने बोझ को बाहर निकाल फेंकेगी, और मनुष्य कहने लगेगा, ''इसे क्या हो गया है?'' उस दिन वह अपना वृत्तान्त सुनाएगी, इसलिए कि तुम्हारे रब ने उसे आदेश दिया होगा''। (सूरा-६६, अज़ ज़िलज़ाल, आयत-१-५)

पर्वतों की दशाः

कुरआन में है-

''वह खड़खड़ा देने वाली, क्या है वह खड़खड़ा देने वाली, और तुम्हें क्या पता कि क्या है वह खड़खड़ा देने वाली? जिस दिन लोग बिखरे हुए पतिंगों के सदृश हो जाएंगे, और पर्वत धुनके हुए रंग बिरंगे ऊन जैसे हो जाएंगे''। (सूरा-१०१, अल-क़ारिया, आयतें-१५)

इस प्रकार कुरआन में अत्यन्त विस्तारपूर्वक क़ियामत का वर्णन किया गया है, ताकि मनुष्य अपनी अवस्था को समझे और क़ियामत के लिए अपने आपको तैयार करे कि वह कर्मपत्र लेकर अल्लाह के पास जाएगा, ताकि उसको अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त हो।

पवित्र कुरआन में इस बात की चेतावनी दी गई है कि इनसान यह न समझ ले कि मरने के बाद वह सड़ गल जाएगा और फिर उसको दोबारा जीवित नहीं किया जाएगा बल्कि उसे अवश्य उठाया जाएगा, ताकि वह अपने कर्मों का हिसाब दे। ''नहीं! मैं सौगन्ध खाता हूं क़ियामत के दिन की और नहीं! सौगन्ध खाता हूं उस आत्मा की, जो मलामत करने वाली है, क्या मनुष्य यह समझता है कि हम कदापि उसकी हडिडयों को एकत्र नहीं करेंगे। हां, अवश्य करेंगे? हम उसकी पोरों तक को ठीक-ठाक करने का सामर्थ्य रखते हैं''। (सूरा-७५, अल-क़ियामह, आयतें१-४)

अर्थात अल्लाह सर्वशक्तिमान है। वह जो चाहे कर सकता है। इसलिए क़ियामत के दिन उंगलियां और शरीर के दूसरे भाग सड़-गल गए होंगे उनको दोबारा ठीक कर देगा, और उस दिन सभी मनुष्यों को उठा खड़ा करेगा।

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। जिन सदस्यों को हार्ड कापी न मिल सके वह हमारी वेब साइट से इसलाहे समाज के हर अंक लोड कर सकते हैं इसके अलावा इसलाहे समाज की पीडीएफ फाइल अपने स्मार्ट फून पर भी मंगवाया जा सकता है। इसलिए इसलाहे समाज के सदस्यों से अनुरोध है कि वह अपना वाट्सएप नम्बर और ईमेल आई डी कार्यालय को अवश भेजें ताकि हार्ड कापी न मिलने की सूरत में उनको पीडीएफ फाइल ईमेल या स्मार्ट फून पर भेजा जा सके। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

इस्लाम में मआफ और सहन करने की शिक्षा

नौशाद अहमद

इस्लाम धर्म में दया करूणा की बड़ी अहमियत है, जिस समाज में दया और मआफ करने का जजबा पाया जाता है वह समाज अम्न व शान्ति का प्रतीक होता है उस समाज के लोग सुखमय जीवन गुजारते हैं, इसी लिये इस्लाम ने मआफी तलाफी पर बहुत जोर दिया है। और हदीस में मआफ करने की बड़ी प्रशंसा की गयी है। जो इन्सान किसी को मआफ कर देता है वह अल्लाह के नेक बन्दों में गिना जाता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जो लोग गुस्सा पी जाते हैं (अर्थात गुस्से को बर्दाश्त कर लेते है) और दूसरों के दोष को मआफ कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह तआला को बहुत पसन्द और प्रिय हैं'' (सूरे आल इमरान-१३४)

कुरआन ने गुस्सा सहन करने वालों की सराहना करते हुए फरमायाः

''वह लोग जो बड़े गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब गुस्से में आ जाते हैं तो मआफ कर देते हैं'' (सूरे शूरा-३७)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''बलवान वह नहीं है जो कुश्ती में दूसरों को पछाड़ दे बल्कि हकीकत में बहादुर एवं बलवान वह है जो गुस्से की हालत में अपने ऊपर कन्ट्रोल रखे'' (बुखारी १६१२, मुस्लिम १०७)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र कुछ ऐसे लोगों के पास से हुआ जो कुश्ती लड़ रहे थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या हो रहा है? लोगों ने कहा फलाँ व्यक्ति जिससे भी कुश्ती लड़ता है अपने विरोधी को पछाड़ देता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं तुम्हें इस से भी ताक़तवर आदमी के बारे में न बताऊं वह व्यक्ति जिससे किसी दूसरे व्यक्ति ने गुस्सा दिलाने वाली बात कही हो और वह इस गुस्से पर कन्ट्रोल पा गया और अपने साथी के शैतान पर भी कन्ट्रोल पा गया। (बज़्ज़ार यह हदीस हसन है)

सहीह मुस्लिम की रिवायत है हज़रत इब्ने मसऊद रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम पहलवान किसे मानते हो? उन्होंने कहा कि जिसे पछाड़ा न जा सके तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया पहलवान वह है जो गुस्से के वक़्त अपने ऊपर कन्ट्रोल रखे।

गुस्से के वक़्त शैतान इन्सान को भड़काता है इसका सबसे बेहतरीन एलाज यह है कि गुस्से के वक़्त अल्लाह से मदद और पनाह माँगी जाए। कुरआन में एक आयत का अर्थ है कि

''अगर तुम्हें शैतान की तरफ से चोका लगे (अर्थात शैतान गुस्से को उत्तेजित कर दे) तो अल्लाह की पनाह माँगो। यक़ीनन वही सुनने वाला जानने वाला है''

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम में से किसी को

गुस्सा आए तो खामोश हो जाए। (मुसनद अहमद, सहीहुल जामे-६६३)

अबू ज़र रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो वह बैठ जाए अगर गुस्सा खत्म हो तो ठीक वर्ना लेट जाए (मुसनद अहमद, अबू दाऊद, इब्ने हिब्बान, सहीहुल जामे ६६४)

ऊपर बयान की गई हदीसों से मालूम हुआ कि इन्सान की असल ताक़त सब्र व सहन है। गुस्से की हालत में शैतान इन्सान को बहकाता और भड़काता है ऐसे वक़्त में अगर कोई इन्सान अपने गुस्से पर काबू पा लेता है तो सही मानों में वही पहलवान और बहादुर है। जो अपने गुस्से को कन्ट्रोल नहीं कर सका तो इसका मतलब यह हुआ कि शैतान उसको बहकाने में कामयाब हो गया और यह बहादुरी नहीं है बल्कि इन्सान की कमजोरी है, इस कमज़ोरी पर कन्ट्रोल करना ज़रूरी है वर्ना गुस्सा इन्सान को नकारात्मक दिशा में डाल देता है।

जब किसी इन्सान को गुस्सा आता है तो वह आचरण और मान मर्यादाओं को भूल कर अनाप शनाप बोलने लगता है जैसा कि आपसी झगड़ों के मौक़े पर देखा जाता है कि लोग मामूली मामूली बात को लेकर एक दूसरे को गाली गुलूच पर उतर आते हैं जबकि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुसलमान वह है जिस की जुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफूज रहें" (बुखारी)

इसी तरह से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सबसे मुकम्मल ईमान रखने वाले वह हैं जो सबसे अच्छी आदतों वाले हों" (तिर्मिज़ी-२००३)

कहने का अर्थ यह है कि इस्लाम ने जहां कानून की सीमा में रहते हुए जालिमों को उसके जुल्म से रोकने का आदेश दिया वहीं अपने अनुयाइयों को दूसरों के साथ दया करूणा नर्मी और मआफी का व्यवहार करने का भी हुक्म दिया है। हम सभी लोगों को एक दूसरे के साथ नर्मी और शालीनता का मामला करना चाहिए, सख्ती और क्रोध से बचना चाहिए, इस्लाम हम सभी लोगों को यही पाठ सिखाता है क्योंकि सख्ती और बदजुबानी किसी भी मसले का हल नहीं है बल्कि एक दूसरे को बर्दाश्त करने में है।

❑ ❑ ❑

ऊपर बयान की गई हदीसों से मालूम हुआ कि इन्सान की असल ताक़त सब्र व सहन है। गुस्से की हालत में शैतान इन्सान को बहकाता और भड़काता है ऐसे वक़्त में अगर कोई इन्सान अपने गुस्से पर काबू पा लेता है तो सही मानों में वही पहलवान और बहादुर है। जो अपने गुस्से को कन्ट्रोल नहीं कर सका तो इसका मतलब यह हुआ कि शैतान उसको बहकाने में कामयाब हो गया और यह बहादुरी नहीं है बल्कि इन्सान की कमजोरी है, इस कमज़ोरी पर कन्ट्रोल करना ज़रूरी है वर्ना गुस्सा इन्सान को नकारात्मक दिशा में डाल देता है।

पब जी ऐप से बचाने की ज़रूरत

एन. अहमद

टेकनालोजी की बढ़ती रफतार ने ऐसी तरक्की की है कि खुद बनाने वाले भी हैरान हैं। इसी टेक्नोलोजी ने आज की दुनिया में स्मार्ट फोन को कला के नाम पर ऐसे ऐसे ऐप दिये हैं जो नई नस्ल को गलत दिशा में ले जा रहे हैं और उनका सही गाइडेन्स न होने के कारण वह इस तरफ दीवानावार भागते जा रहे हैं।

कुछ ऐप के बुरे प्रभाव से कहीं लड़ाई हो रही है कहीं संबन्ध टूट रहे हैं, रिश्ते नाते बिखर रहे है, चोरियां हो रही हैं, नई नस्ल के जीने का अन्दाज़ बदल रहा है, जीने का अन्दाज़ नकारात्मक होता जा रहा है, ऐप ने इन्साल को इतना व्यस्त कर दिया है कि वह कान पर पड़ने वाली आवाज़ों का सहीह जवाब भी नहीं दे सकता। एक मानसिक गिरावट है जो इन्सान को दिशाहीन बना रही है, वह अपना मकसद खोता जा रहा है, अपने जीवन के मिशन को दिमाग से निकाल रहा है, ऐप ने नई नस्ल के अन्दर की उन मर्यादाओं को भी निकाल बाहर किया है जो एक इन्सान के जीवन का अटूट हिस्सा हैं जो ऐप इन्सान को अपने आस पास की गतिविधियों से अंजान बना दे, वह अपनी जिन्दगी के असल मकसद को भूल कर एक व्यर्थ और बेकार काम में लगा दें और अपने पालनहार की उपासना से दूर कर दें वह ऐप इन्सान के लिये लाभकारी कैसे हो सकता है?

आज कल पबजी ऐप के नुकसानात के बारे में बहुत कहा और सुना जा रहा है, हमारे प्रिय देश समेत संसार के विभिन्न देशों में इस ऐप पर पाबन्दी लगा दी गई है लेकिन इस पाबन्दी के बावजूद इस ऐप ने दिमाग पर ऐसा प्रभाव डाला कि जो एक बार इस ऐप के जाल के चक्कर में फंसता है तो वह उसका इस ऐप के भँवर से निकलना लगभग असंभव हो जाता है।

आज कल पबजी ऐप के नुकसानात के बारे में बहुत कहा और सुना जा रहा है, हमारे प्रिय देश समेत संसार के विभिन्न देशों में इस ऐप पर पाबन्दी लगा दी गई है लेकिन इस पाबन्दी के बावजूद इस ऐप ने दिमाग पर ऐसा प्रभाव डाला कि जो एक बार इस ऐप के जाल के चक्कर में फंसता है तो वह उसका इस ऐप के भँवर से निकलना लगभग असंभव हो जाता है।

वक़्त, धन दौलत और सेहत को बर्बाद और नुकसान पहुंचाने वाले बेशुमार ऐप होंगे लेकिन इस ऐप ने नई नस्ल को दिशाहीन बनाने और अपने मकसद से गाफिल बनाने और मानसिक रूप से कमज़ोर करने में जो रोल अदा किया है उसने नकारात्मक माने जाने वाले तमाम ऐपों के रिकार्ड तोड़ दिये हैं। इसलिये हम सभी लोगों को इस ऐप से दूर रहने के साथ दूसरों को भी इस ऐप के नकारात्मक नुकसानात से बाखबर करना चाहिए। मां बाप और अभिभावकों को इस बारे में बिल्कुल सचेत रहना चाहिए। इसके अलावा समाज के शिक्षित लोगों को इस ऐप के नुकसानात के बारे में बच्चों के अभिभावकों को जागरूक करना चाहिए। एन.जी.ओज़ और स्कूल इस सिलसिले में अहम रोल अदा कर सकते हैं।

❑ ❑ ❑

बच्चों की तर्बियत में कोताही का सबब

लेख: डा० मुहम्मद इसमाईल अनुवाद: अब्दुल मन्नान शिकरावी

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो अपने आपको और अपने अहल व अयाल (बाल बच्चों) को उस जहन्नम से बचाओ जिस का ईंधन इंसान और पत्थर हैं''

इस्लामी सिद्धांत के अनुसार बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण का मक़सद औलाद को जहन्नम से बचाना और ऐसी नस्ल तैयार करना है जो अपने दीन और दुनिया दोनों के लिये काम करे। नेकी, परहेज़गारी, ईमान और तौहीद के ज़रिए दुनिया व आख़िरत के सौभाग्य से सुसज्जित हो। हर इन्सान अपने सांस्कृतिक मेयार के अनुसार शिक्षा को तो समझता और जानता है लेकिन प्रशिक्षण के सिलसिले में सब अंजान और गाफिल हैं जिसकी वजह से वह अपनी औलाद के प्रशिक्षण में गलत तरीका अपनाते हैं इस लिये हर मां बाप के लिये ज़रूरी है कि वह प्रशिक्षण की बुनियादों और सिद्धांतों को जाने और समझे और इस बारे में सहीह तरीक़ा अपनाए।

जब आप किसी से यह मालूम करें या पूछें कि यह क्या है फिर वह जवाब दे कि मुझे मालूम नहीं इसी को अज्ञानता कहा जाता है लेकिन आप किसी से किसी प्याले के बारे में मालूम करें और वह कहे कि यह किताब है तो उसका जवाब गलत होगा क्योंकि सवाल का जवाब बताने वाले को किताब और प्याले का अन्तर मालूम नहीं है। मालूम यह हुआ कि गलत जानकारी अज्ञानता की एक क़िस्म है लेकिन कभी कभार यह अज्ञानता से भी ज़्यादा ख़तरनाक हो जाती है। मेरे कहने का मक़सद यह है कि कुद लोग प्रशिक्षण पर ध्यान ही नहीं देते उन्हें इसकी परवाह ही नहीं होती लेकिन कुछ दूसरे लोग प्रशिक्षण का गलत तरीका अपनाते हैं। इसको दुरूस्त करना और गलत फहमी को जड़ से खतम करना ज़रूरी है। अधिकतर लोगों के नजदीक प्रशिक्षण की कोई अहमियत नहीं है वह यह जानते ही नहीं हैं कि शिक्षा की तरह प्रशिक्षण (तर्बियत) भी बहुत ज़रूरी है जबकि ज़्यादातर लोगों को मालूम ही नहीं कि वह अपने बच्चों को ट्रेनिंग किस प्रकार करें। बच्चों की तर्बियत का एक तरीका यह है कि उसको न ज़्यादा ढील दिया जाए न ज़्यादा सख्ती की जाए क्योंकि ज्यादा सख्ती से भी बच्चे बिगड़ जाते हैं और ज़्यादा ढील देने से भी दिशाहीन हो जाते हैं। जटिल बातों के जरिए बच्चों की तर्बियत करना अनुचित है यह बच्चों के हक़ में लाभकारी नहीं है, बातों को समझाने के लिये आसान तरीका अपनाया जाए। इसी तरह बच्चों की तरबियत में नौकरों और सेवकों पर निर्भर रहने के बजाए स्वयं इस सिलसिले में मेहनत की जाए। तालीम के साथ तर्बियत इस लिये भी ज़रूरी है कि जब तरबियत अच्छी होगी तो बच्चे जटिल मसलों को स्वयं हल कर लेंगे क्योंकि तालीम तो एक थियोरी है जबकि तरबियत एक प्रेकटिकल और व्यवहारिक रूप है जिस के द्वारा सीखी हुई बातों को व्यवहारिक रूप दिया जाता है।

आज कल तर्बियत का काम अध्यापकों से छीन कर मीडिया के हवाले कर दिया गया है जो बच्चों को दिशाहीन बनाने में लगा हुआ है क्यों कि मीडिया में सबसे ज़्यादा टेलीवीजन अपने खतरनाक रवैये से बच्चों के मनोविज्ञान को प्रभावित कर रहा है। कुरआन व हदीस हमारे लिये मुकम्मल जीवन शैली है हमें इसी की रोशनी में अपने बच्चे की तालीम व तबियत करने की ज़रूरत है।

मरने के बाद क्या होगा?

मौलाना नियाज़ अहमद तैयबपूरी

जहाँ तक इस प्रश्न का मामला है कि मरने के बाद आदमी का क्या होगा? कहाँ जाएगा? तो भौतिक वादी इसका ऐसा उत्तर देते हैं जिसमें वह मानवता को पुशओं सेभी नीचे उतार देते हैं, बड़े अभिमान के साथ मानव के भरे पुरे जीवन के परिणाम के बारे में कहते हैं कि मरने के बाद आदमी खत्म हो जाएगा, जमीन उसे अपने पेट में समेट लेगी जैसे लाखों जानदारों को समेट चुकी है जबकि जमीन मानव को उसकी पहली हालत में लौटा देगी।

इनके यहाँ यही जीवन की कहानी है पैदा होते हैं और मर कर मिटटी में मिल जाते हैं, बुराई की सज़ा और अच्छाई का बदला नहीं है। अच्छे और बुरे सब बराबर हैं। वह आदमी जो अपनी इच्छाओं की कुर्बानी देकर दूसरों की सेवा करे और जो अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए दूसरों को कष्ट पहुंचाए दोनों बराबर हैं। इसी प्रकार जिसने सच और हक के लिए कुर्बानी दी और जिस ने गलत और नाहक काम के लिए दूसरों पर अत्याचार किया सब इनके (भौतिकवादियों) के यहां बराबर हैं।

जब बात ऐसी है तो संसार की कौन सी चीज़ मानव को दूसरों से प्रतिष्ठित करती है? इसके आस पास की चीजें को क्यों इसके अधीन किया गया है? इसको ऐसी आश्चर्यजनक योग्यता, आध्यात्मिक तथा मानसिक शक्ति क्यों प्रदान की गई जो दूसरों को नहीं दी गई? इसका भेद क्या है कि आदमी आगे बढ़ने तथा उन्नति करने का प्रयास करता है? जबकि इसका अन्तिम परिणाम यही है कि वह खत्म हो जाएगा?

मुसलमान इस बात का ज्ञान रखते हैं कि मरने के बाद उनका क्या परिणाम होगा? वह इस बात पर विशवास रखते हैं कि इनको इस दुनिया के लिए नहीं पैदा किया गया है बल्कि यह दुनिया उनके लिए बनाई गई है।

यह जानते हैं कि इन्हें न खत्म होने वाले जीवन तथा सदैव बाकी रहने वाले घर (जन्नत) के लिए पैदा किया गया है। यह इस जीवन में आखिरत के लिए तैयारी करते हैं, यहां वह कार्य करते हैं जो मरने के बाद वाले जीवन में लाभदायक हों। आध्यात्मिक तौर से तरक्की करते हैं यहां तक कि वह इस योग्य हो जाते हैं कि उस अच्छे घर में प्रवेश करे जिस में केवल अच्छे लोग ही जाएंगे। और वह जन्नत का घर है।

जो इस संसार को इतने मजबूत और सुंदर ढंग से बनाने वाला है वह हर चीज़ के बारे में जानकारी रखता है उसने हर चीज़ के लिए एक सीमा निश्चित की है। इन सब के बाद आदमी इस बात पर ईमान रखता है कि जीवन की यह ठाठ बाट उठ जाएगी जबकि लूटने वाले ने लूटा, चोर ने चोरी किया, और इन अपराधियों को सज़ा नहीं दी जा सकी और उस मजलूम के लिए बदला नहीं लिया जा सका है जिस का अल्लाह के अतिरिक्त कोई मददगार नहीं, और आकाश की छांव के अतिरिक्त कोई पनाह की जगह नहीं। अच्छे आदमी को लोगों ने सताया था पर इसे बदला नहीं दिया जा सका। यह तो न्याय के

विपरीत है संसार को इतने मज़बूत तथा सुंदर ढंग से बनाने वाला अल्लाह इससे पाक है अर्थात वह इन्सान के साथ न्याय चाहता है। पवित्र कुरआन ने इसकी वास्तविकता को इन शब्दों में बयान किया है।

''क्या तुम यह गुमान करते हो कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ लौटाए ही नहीं जाओगे। अल्लाह सच्चा बादशाह है''। (सूरह मोमिन १५-१६)

फरमाया : ''क्या इंसान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा''। (सूरे कियामः-३६)

''क्या उन लोगों का जो बुरे काम करते हैं यह गुमान है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और नेक काम किए कि उनका मरना जीना बराबर हो जाए, बुरा है वह फैसला जो वह कर रहे हैं'' (सूरे जासिया-२१)

इंसान को क्यों पैदा कया गया है?

जहां तक इस सवाल की बात है तो हर आदमी पर अनिवार्य है कि वह अपने आप से सवाल करे कि उसे इस दुनिया में क्यों पैदा किया गया है? दूसरे प्राणियों की अपेक्षा प्रधानता क्यों प्राप्त है? जमीन के ऊपर हमें करना क्या है? इसका उत्तर कुरआन व हदीस के पास मौजूद है। किसी चीज़ का बनाने वाला अपनी बनाई हुई चीज़ के भेदों को जानता है कि उसने उसे क्यों बनाया है? और उसे इसी तरह क्यों बनाया है किसी दूसरी शक्ल में क्यों नहीं बनया?

अल्लाह ने मानव को बनाया, इसकी सारी चीज़ों की तदबीर और देख रेख वही करता है हमें चाहिए कि हम जानें कि ए हमारे मालिक! तूने मानव को क्यों पैदा किया है?

.....क्या इनको केवल खाने पीने के लिए बनाया है? क्या इनको खेलने कूदने के लिए पैदा किया है? क्या इनको इसलिए पैदा किया गया है ताकि वह जमीनपर चलें जमीन की पैदावार खाएं फिर मर कर वैसे ही मिटटी हो जाएं और कहानी खत्म ?

मानव के अन्दर इन शक्तियों तथा योग्यताओं को क्यों रखा गया है? इसे बुद्धि, इरादा, और सोचने समझने की आश्चर्यजनक शक्ति प्रदान की गई है? हम को इस प्रश्न का उत्तर अल्लाह ने कुरआन में बताया है कि उसने मानव को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, लोग केवल उसी के आगे शीर्ष झुकाएं किसी दूसरे के सामने सर न झुकाएं उसके आदेशों का अनुपालन करें।

अल्लाह तआला ने फरमाया है:

मैंने इंसानों और जिन्नातों को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, मैं उनसे न रोज़ी चाहता हूं और न यह चाहता हूं कि वह मुझे खिलाएं अल्लाह रोज़ी देने वाला और ताकत वाला है। (सूरे ज़ारियात ५६-५८)

इस संसार में गौर करने वाला देखेगा कि इसकी हर जीवित चीज़ दूसरे के लिए काम करती है।

यहां पर यही सवाल पैदा होता है। प्रकृति इसका उत्तर देती है कि मानव अल्लाह के लिए है उसकी पूजा के लिए, अल्लाह के हक़ को अदा करने के लिए यह जाएज़ और सम्भव नहीं है कि मानव ज़मीन व आकाश में किसी दूसरी चीज़ के लिए पैदा किया गया हो। क्योंकि ज़मीन व आकाश की सारी चीज़ें इसके अधीन हैं, इसी की सेवा करती हैं जैसा कि देखा जाता है।

इस्लाम ने मानव को सम्मान दिया है, इस्लाम की नज़र में मानव का बहुत महत्व है, संसार की बहुत सारी मखलूक प्राणीवर्ग में इसे श्रेष्ठता प्राप्त है, अल्लाह ने प्राणीवर्ग में ऊंचा स्थान देकर इसे सम्मानित

किया है, मानव को जिन चीज़ों के द्वारा सम्मानित किया गया है संक्षेप में इनका वर्णन किया जा रहा है।

अल्लाह ने मानव को इस प्रकार सम्मानित किया है कि उसे ज़मीन पर अपना खलीफ़ा बनाया है। यह वह स्थान है जिसको पाने के लिए फरिश्तों की गर्दनें उठी थीं और इनके मन में इसको पाने की चाहत पैदा हुई थी, लेकिन इनको नहीं दिया गया अल्लाह ने इस महान पदवी को मानव को प्रदान किया।

इसका सविस्तार वर्णन पवित्र कुरआन के सूरे बक़रा में है।

इन्सान के शरीर की रचना बहुत अच्छे ढंग से की है, इस्लाम ने इस बात का एलान किया कि अल्लाह ने इंसान को बहुत अच्छे ढंग से बनाया है सूरे तीन-४ और सूरे तग़ाबुन में फरमाया ''उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाईं और बहुत अच्छी बनाईं'' (सूरे तगाबुन-३)

इन्सान के शरीर में रूह फूंक कर इसे प्रधानता देनाः ऊपर बयान की गई चीज़ों के अतिरिक्त अल्लाह ने इसके अंदर रूह फूंकी, सारे इंसानों के पिता आदम अ० ही के लिए यह विशेषता नहीं है कि इनके शरीर में अल्लाह ने अपनी रूह फूंकी है जैसा कि कुछ लोगों को इसके बारे में भ्रम हुआ है बल्कि इनके बेटों, पूरी संतान और नस्ल को यह विशेषता प्राप्त है अल्लाह ने इसका वर्णन कुरआन में किया है। फरमाया फिर उसकी नस्ल को भी बेहैसियत पानी (वीर्य) से चलाया जिसे ठीक ठाक कर के उसमें अपनी रूह फूंकी, उसने तुम्हारे कान, आंख और दिल को बनाया (इसके बावजूद तुम उसका बहुत कम शुकरिया अदा करते हो (सूरे सजदा८-९)

रूह फूंकने का यह सम्मान केवल आदम अ० के लिए नहीं था बल्कि सारी मानवता के लिए है अल्लाह ने उसी प्रकार इनको दिमाग ज्ञान और रूह प्रदान किया है जैसे आदम अ० को दिया था और इनको ज़मीन पर खलीफा बनाया कुरआन ने स्पष्ट किया है कि सारे मानव सम्मान जनक हैं हमने आदम की संतान को बड़ी इज्ज़त दी, इनको ज़मीन और पानी की कशतियां दीं इनको पाकीज़ा (पवित्र) चीज़ों की रोज़ी प्रदान की, और बहुत सारे प्राणीजनों पर इन को प्रधानता दी। (सूरे इसरा-७०)

यह सारी चीज़ें इस बात को साबित करती हैं कि इनसान सारे प्राणी वर्ग में विशिष्ठ और अलग हैसियत रखता है जानवर भले ही मिटटी से पैदा किए जाने में मानव के समान हैं, पर दोनों में बड़ा अंतर है अल्लाह ने मानव को बुद्धि और ज्ञान प्रदान किया, यह चीज़ें पशुओं में नहीं पाई जाती हैं पशु को अल्लाह ने किसी प्रकार की इबादत का आदेश नहीं दिया है जबकि मानव को इस बात का आदेश दिया गया है कि वह अल्लाह के सारे आदेशों का अनुपालन करे।

इन पशुओं को केवल इसलिए पैदा किया गया है ताकि मानव इनको अपने काम में लाएं, कुछ जानवरों का दूध इस्तेमाल किया जाता है और सवारी की जाती है।

मानव की असलीयत के विषय में यह कल्पना उस कल्पना से भिन्न है जो डारविन ने पेश किया था इस का कहना था कि मानव पहले जानवर था इसने तरक्की करते करते मानव की मौजूदा शक्ल धारण की है वैज्ञानिकों ने डारविन के इस विचार को नकार दिया है। विज्ञानिक दृष्टि कोण से यह साबित नहीं हो सका है कि मानव असल में जानवर था यह केवल एक विचार है जो तर्क रहित है। डी एन ए चेकअप ने डारविन के दृष्टि कोण को धराशायी कर दिया है और उसके दृष्टि कोण का अब कोई महत्व नहीं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः आसानी पैदा करो और मुश्किल न पैदा करो, खुशखबरी सुनाओ और घृणा की बातें न करो। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स ने सूरज के उसके पश्चिम से निकलने से पहले तौबा कर ली अल्लाह उसकी तौबा को कुबूल करेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सदक़ा करने से माल में किसी तरह की कमी नहीं होती और अल्लाह तआला बन्दे को मआफ करने से उसकी इज़्ज़त में बढ़ोतरी कर देता है और जो अल्लाह के लिये झुकता है तो अल्लाह उसके दर्जे को बुलन्द कर देता है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या तुम जानते हो गीबत क्या है? सहाब-ए-किराम ने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अपने भाई का जिक्र इस तरह करो जिसको वह नापसन्द करे। पूछा गया आप का क्या ख्याल है अगर मेरे भाई के अन्दर वह बातें पायीं जायें जो मैं ने कही हैं? फरमायाः जो बातें तुम ने कही हैं, अगर उसमें पायी जायें तो यह गीबत है और अगर न पायी जायें तो वास्तव में तुम ने उस पर झूठा आरोप लगाया। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

मुफर्रिदून आगे बढ़ गये। लोगों ने पूछा मुफर्रिदून क्या है? फरमायाः अल्लाह को ज्यादा से ज्यादा याद करने वाले मर्द और औरत। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-५४)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तमाम कामों में दायें साइड को पसन्द करते थे, पाकी हासिल करने में, कंघी करने में और जूता पहनने में। (बुखारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह को हर वक़्त याद करते थे। (मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो वसल्लम से बयान करती हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फज्र की दो रकअ़तें दुनिया और उसकी तमाम चीज़ों से बेहतर हैं। (मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः तीन चीज़ें मय्यत के साथ जाती हैं और दो चीज़ें लौट आती हैं और एक चीज़ बाकी रह जाती है उसके परिवार वाले उसका माल और उसका अमल उसके साथ जाता है लेकिन उसके परिवार उसका माल लौट आता है और उसका अमल बाकी रह जाता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो, बेशक सफों को बराबर करना नमाज़ की दुरूस्तगी में से है। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे जिब्रईल पड़ोसी के बारे में बराबर वसीयत करते रहे यहां तक कि मुझे यह यकीन होने लगा कि वह उसको वारिस बना देंगे। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों से भीक मांगने वाला आदमी क्यामत के दिन इस हाल में आये गा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इस्लाम का पैग़ाम इन्सानियत

शमीम अहमद अंसार उमरी

दीने इस्लाम इन्सानियत का है दीन
जो मुहब्बत है इस में किसी में नहीं
हम मुहब्बत के इंसानियत के अमीं
हम मुबल्लिग़ हैं अंसारे दीने मतीं
हम मुसलमान हमदर्दे इन्सान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

दीन का पैग़ाम पैगामे इन्सानियत
रब का एहसान इन्आमे इन्सानियत
दीन का इतमाम इतमामे इन्सानियत
हुस्ने अंजाम इकरामे इन्सानियत
आदिमियत के दाई हैं इन्सान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

हम बातिल से टकराएंगे
हक़ को अपनाएंगे हक़ जहां पाएंगे
दाइए अम्न हैं अम्न फैलाएंगे
अम्न होगा वहां हम जहां जाएंगे
ख़ैर उम्मत हैं हम एहले ईमां हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

वारिसाने उलूमे नबुव्वत हैं हम
रहनुमायाने राहे हिदायत हैं हम
काति-ए-शिर्क व बिदअत हैं हम
पासदाराने तौहीद व सुन्नत हैं हम
हम किताब व सुनन के निगेहबान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

रह्‌मते कुल जहां आखिरी हैं नबी
सारे इंसा हैं उनके ही उम्मती
रब का पैग़ाम है उनका पैगाम ही
पैरवी बस उन्हीं की करें हम सभी
हम मुती उनके महबूबे रहमान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

फर्ज़ है हम पे उस ज़ात की बन्दगी
सारे इन्सान को जिसने दी ज़िन्दगी
इन्हेराफे इबादत है शर्मिन्दगी
हम क्यों ना करें उसकी पाबन्दगी
हम सभी रब के पाबन्दे फरमान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

या इलाही हमें हक़ की पहचान दे
हमको असलाफ की शौकत व शान दे
हम को तौफीक़ इख्लास व एहसान दे
हुस्ने अख्लाक़ दे सिददीक़ ईमान दे
दीने रहमत पे हम दिल से कुर्बान हैं
हम मुसलमान हैं हम मुसलमान हैं

शब्द -अर्थ

अमीं-रक्षक
मुबल्लिग-प्रचारक
अंसार-मददगार
मती-मज़बूत
दाई-आवाहक, प्रचारक
बातिल- असत्य
ख़ैर-भलाई
उलूम-ज्ञान
वारिसीन-हक पाने वाला, प्रतिनिधि

शब्द -अर्थ

रहनुमा-मार्गदर्शक
पास्दारान-रक्षक
निगेहबान-निगरानी करने वाला, संरक्षक
जहां-संसार
मुती-अनुसरण और पैरवी करने वाला
महबूब-प्रिय
रहमान-दयालु
बन्दगी-उपासना

शब्द -अर्थ

इन्हेराफ-फिरना, मुंह मोड़ना
शर्मिन्दगी-पछतावा
असलाफ-बुजुर्ग, पूर्वज
तौफीक़- क्षमता
सिददीक-सच्चा
रहमत-दया, करूणा

जहेज़ समाज की बड़ी समस्या

सफीयुल्लाह अंसारी

आज जब हम समाज पर नज़र डालते हैं तो चौदह सौ साल पहले का वह जमा-न-ए- जाहिलियत हमें याद आता है जब ज़िल्लत और अपमान से बचने के लिये निर्दोष बच्चियों को जिन्दा दफन कर दिया जाता था। अधिकतर मां बाप बड़े शौक़ से लड़की को बड़ी मेहनत व मशक़्क़त से पालते हैं, उन्हें शिक्षा देते हैं, कुछ नहीं तो कम से कम कोई हुनर ज़रूर सिखा देते हैं। जब शादी के लायक़ हो जाती हैं तो उसके सामने जहेज़ (दहेज) जैसी मुसीबत सामने आ जाती है। दहेज़ का इस्लाम धर्म से कोई संबन्ध नहीं है बल्कि यह दूसरों की रस्म है जिस की पैरवी हमारे मुसलमान भाई कर रहे हैं और इस्लाम के अनमोल क़ानून वरासत से बेटी को महरूम कर देते हैं।

कहते हैं सभी लोग कि लानत जहेज़ है

फिर भी तलाश करते हैं रिश्ता जहेज़ का

जब कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि जिस ने दूसरी क़ौम का तरीक़ा अपनाया तो वह उन्हीं में से है। (अबू दाऊद) फरमायाः निकाह मेरी सुन्नत है जिसने मेरे तरीके से मुंह मोड़ा तो वह मुझमें से नहीं है'' (मिश्कात, रिवायत हज़रत आइशा-१२५)

बाज़ लोग दलील देते हैं कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने अपनी लाडली चहेती बेटी हज़रत फातिमा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा को जहेज़ दिया था इसलिये दहेज़ देने में कोई हर्ज नहीं है। यह गलत फहमी है। आपको मालूम होना चाहिए कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की चार बेटियां थीं। फातिमा, ज़ैनब, रूकैया, उम्मे कुलसूम रज़िअल्लाहो तआला अन्हुम, फातिमा को छोड़कर तीनों बेटियों को अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने जहेज़ नहीं दिया। नबी स०अ०व० ने बचपन ही से हज़रत अली को अपनी किफालत (भरण पोषण) में ले रखा था और हर तरह इनकी देख भाल करते थे। हजूर स०अ०व० ने घर बसाने के लिये हज़रत अली को कुछ सामान दिया था जिसके बारे में हज़रत अली खुद फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा को जहेज़ में एक चादर, चमड़े का एक मश्कीज़ा और एक तकिया दिया था जिसमें इज़ख़िर घास भरी हुई थी।

हफीज़ जालनधरी ने अपनी शायरी में इसको इस तरह बयान किया है।

जहेज़ उनको मिला जो कुछ शहनशाहे दो अलाम से, मिला है दर्स उनको सादगी का फख़रे आदम से, अक़्ले दुनयवी जो हिस्सा जोहरा में आई थी, ख़जूर खुर्दरी से बान एक चारपाई थी, मशक़्क़त उम्र भर करना लिखा था जो मुक़द्दर में, मिली थीं चक्कियां दो ताकि आटा पीस लें घर में, घड़े मिटटी के दो थे एक चमड़े का गद्दा था, न ऐसा खुश्नुमा न बदज़ेब और भददा था, भरे थे उसमें रूई की जगह पत्ते खुजूरों के, यह वह सामान था जिन पे जान व दिल कुर्बान हूरों के।

जहेज़ देना रसूल स०अ०व० की सुन्नत नहीं है और यह सुन्नत होता तो आप अपनी दूसरी लड़कियों को भी इससे महरूम (वंचित) नहीं करते और इस तरह की बात भी सहाबा किराम रिजवानुल्लाही अलैहिम अजमईन की ज़िन्दगी में भी नहीं मिलती है जिससे मालूम हुआ जहेज़ देना रसूल स० की सुन्नत नहीं।

इस्लाम में जानवरों के अधिकार

मौलाना कलीमुल्लाह उमरी मदनी

इस्लाम दीने रहमत है, उसकी रहमत इन्सान की हद तक सीमित नहीं है बल्कि हर जानदार के लिये है। उसकी रहमत (दया, करूणा) ने मानवता को लाभान्वित करने के साथ साथ जानवरों को भी अपनी असीमित रहमत से मालामाल किया है। इस्लाम से पहले अरबों की सख्त दिली और उनके जुल्म का निशाना इन्सान के अलावा जानवर भी बनते थे वह कई तरीके से जानवरों को दुख देते और उन पर जुल्म ढ़ाते थे। जानवरों को अंधाध ुंध मारना फिर लोगों को खाने की दावत देना उनके दानशीलता की पहचान थी, उनके यहां ज्यादा से ज्यादा जानवरों को जबह करने के मामले में मुकाबले हुआ करते थे, जिसमें दोनों पक्ष बारी बारी ऊंट ज़बह करते थे जो रूक जाता या जिसके ऊंट खत्म हो जाते वह बाज़ी हार जाता था। एक तरीका यह भी था कि कोई शख्स मर जाता तो उसकी सवारी के जानवरों को उसकी कब्र पर भूखा प्यासा बांध दिया जाता था। उनके लिये न चारे का इन्तेज़ाम किया जाता और न पानी का इसी हालत में वह जानवर सूख कर मर जाते थे। यह और इस तरह के दसयों जुल्म और क्रूरता का व्यवहार जमान-ए जाहिलियत में (इस्लाम धर्म के आने से पहले) किये जाते थे इस्लाम आया तो उसने जाहिलियत के इन सारे खुराफात और अत्याचार को खत्म करने का हुक्म दिया कि जानवरों के साथ बेहतर व्यवहार किया जाये। बेजुबान जानवर इन्सान के अच्छे बर्ताव के पात्र हैं।

आप स०अ०व० ने फरमायाः जो मुसलमान पेड़ लगाता है, या खेती बाड़ी करता है और उसको चिडिया या इन्सान या कोई जानवर खाता है तो यह सदका (सवाब) का काम है। (मुस्लिम)

इतना ही नहीं बल्कि जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार पर सवाब की खुशखबरी सुनाई गयी है। सुनन इब्ने माजा की हदीस है एक सहाबी रसूल स०अ०व० से पूछते हैं कि मैंने अपने ऊंटों के लिए एक हौज़ बना रखा है, कभी कभार उस पर भूले भटके जानवर भी आ जाते हैं अगर मैं उन्हें पिला दूं तो क्या इस पर भी मुझे सवाब मिले गा? आप स०अ०व० ने फरमाया हर प्यासे या जानदार के साथ अच्छा व्यवहार करने से सवाब मिलता है। (इब्ने माजा ३६८६)

हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है जिसमें नबी स०अ०व० ने एक शख्स का वाक्या बयान किया है, जो प्यास की वजह से परेशान हो रहा था वह एक कुवें से पानी पीकर निकला ही था कि वह देख रहा है कि एक कुत्ता का प्यास से वैसे की बुरा हाल है जैसे कि उसका था और वह कीचड़ को चाट चाट कर अपनी प्यास बुझा रहा है। वह शख्स कुवें में दुबारा उतर कर पानी भर लाता है और कुत्ते को पिला देता है। अल्लाह को इस शख्स का यह नेक काम पसन्द आ गया और उसकी मग्फिरत कर दी। इस वाक्ये को सुनकर सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने में सवाब है। (बुखारी-६००८ अबू दावूद २५५०)

इस्लाम ने जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने की जो शिक्षा दी है और उनके जो अधिकार बयान किये हैं उनका निम्न में यहां जिक्र किया जा रहा है।

जानवरों को सताया न जाये

इस्लाम ने जानवरों को भी चैन से जीने का हक दिया है उसकी उसूली तालीम यह है कि न खुद

तकलीफ उठाओ और न दूसरों को तकलीफ पहुंचाओ (इब्ने माजा ३४०) दूसरों को तकलीफ देना अगर्चे वह जानवर ही क्यों न हो इस्लाम के नजदीक दुरूस्त नहीं है। हज़रत रबी बिन मस्ऊद रजिअल्लाहो फरमाते हैं कि एक सफर में हम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। आप हाजत के लिये चले गये हमने एक लाल पक्षी को देखा जिसके साथ उसके दो बच्चे भी थे हमने इन बच्चों को पकड़ लिया तो वह पक्षी दुख के मारे उन बच्चों के पास मंडलाने लगा, इतने में नबी स०अ०व० भी आ पहुंचे तो आपने फरमायाः इस पक्षी से उसके बच्चों को छीन कर किसने दुख पहुचाया है, उसके बच्चों को लौटा दो। (अबू दावूद २६७३)

जानवरों को दुख पहुंचाना तो दूर की बात है उन्हें लानत मलामत करने से भी इस्लाम ने मना किया है। हज़रत इमाम बिन हुसैन से रिवायत है कि एक बार रसूल स०अ०व० सफर में थे। एक अन्सारी औरत ऊंटनी पर सवार ऊंटनी से ऊब गयी थी तो उसने उस पर लानत की। रसूल स०अ०व० ने जब सुना तो फरमायाः इस ऊंटनी पर जो सामान लदा हुआ है वह उतार लो और इसे (इसके बदले में आज़ाद) छोड़ दो इस लिये कि इस पर लानत की गयी है। हज़रत इमाम फरमाते हैं कि मैं अब भी इस ऊंटनी को देख रहा हूं, वह लोगों के बीच चल रही है कोई उसको रोक नहीं रहा है। (मुस्लिम ६६०४)

इस हदीस की व्याख्या में हाफिज़ सलाहुददीन यूसुफ लिखते हैं इससे मालूम हुआ कि तंगदिल होकर इन्सानों को तो दूर की बात जानवरों को भी बददुआ देना और उन पर लानत करना जाइज़ नहीं है। (रियाजुस्सालिहीन ३४४/२)

कुछ रिवायतों से यह भी मालूम होता है कि जो जानवर इन्सानों को भाइदा पहुचाता है उसकी कद्र करनी चाहिये जैसा कि जैद बिन खालिद जोहनी रजिअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया मुर्ग को बुरा भला न कहो, क्योंकि वह सुबह सवैरे अपनी आवाज़ के जरिये तुम्हें बेदार करता है। (मुस्नद अहमद १४२/५ ४/११५)

जो जानवर जिस काम के लिये पैदा किया गया है उससे वही काम लिया जाये।

जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार और इन्साफ यह है कि अल्लाह ने जिस जानवर को जिस काम के लिये पैदा किया है उससे वही काम लिया जाये। अगर कोई उससे दूसरा काम लेता है तो यह उसके साथ जुल्म है मिसाल के तौर पर अल्लाह ने बैल को खेती बाड़ी के लिये पैदा किया है, अगर कोई उससे गदधे की तरह बोझ ढ़ोने का काम लेता है तो इस्लाम के नजदीक यह जुल्म है।

एक बार रसूल स०अ०व० ने फरमायाः अपने जानवरों की पीठ को मिंबर न बनाओ जानवर से स्टेज का काम न लो। अल्लाह ने उन्हें तुम्हारा फरमांबरदार सिर्फ इसलिये बनाया है कि वह तुमको ऐसी जगहों पर आसानी से पहुंचा दे जहां तुम बड़ी कठिनाई के बाद पहुंच सकते थे तुम्हारे लिये अल्लाह ने जमीन को पैदा किया है, अपनी ज़रूरतें उससे पूरी करो। (अबू दावूद २५६७)

आप से यह भी बयान किया गया है कि एक शख्स बैल से सवारी का काम ले रहा था अल्लाह की कुदरते खास से उसे बोलने की क्षमता मिल गयी तो उस बैल ने कहा मुझे इस काम के लिये नहीं पैदा किया गया।

जानवरों के आराम का ख्याल रखा जाये जिन जानवरों से काम किया जाता है या जिन से लाभ उठाया जाता है उनके बारे में इस्लाम की तालीम यह है कि उनके आराम व राहत का पूरा पूरा ख्याल रखा जाये, उन्हें वक्त पर खिलाया जाये, अगर वह बीमार हो तो उनका एलाज कराया जाये, उनके दुख की हालत में काम न लिया जाये, उनके रहने सहने का उचित प्रबन्ध किया

जाये और उनसे उतना ही काम किया जाये जितना वह सह सकें, उनसे उस वक्त तक काम लेना जब तक कि वह बुरी तरह थक हार कर आगे काम करने के लायक न रह जायें या उनकी हालत दयनीय हो जाने के बावजूद मारमार कर उनसे काम लेना, या उन्हें भूखा प्यासा रख कर काम लेना जुल्म है। आप स०अ०व० ने फरमाया अगर हरयाली वाली जमीन से गुजर हो तो अपनी सवारी को धीरे चलाओ और जानवर को उससे भाइदा उठाने का मौका दो और अकाल का मौसमहो तो तेज तेज चलाओ ताकि वह अपनी मंजिल पर जल्द पहुंचे और उसे खाने पीने का और आराम का मौका मिले। अबू दावूद २५६६

एक बार आप स०अ०व० एक अन्सारी के बाग में इंसानी जरूरत के लिये गये, उसमें एक ऊंट था जो आपको देखर चीखा और रोने लगा मुहम्मद स०अ०व० उस के पास गये, उसकी कन्पटी पर हाथ रखा और वहां के लोगों से पूछा यह किस का ऊंट है? एक अन्सारी नौजवान ने आगे बढ़कर कहा मेरा है। आपने कहा क्या इस जानवर के बारे में अल्लाह से डरते नहीं जिस का अल्लाह ने मालिक तुम्हकें मालिक तुम्हें बनाया है? इस ऊंट ने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और इस पर सख्ती करते हो अबू दावूद २५४९

एक मौके पर आपने एक ऊंट को देखा उसकी पीठ उसके पेट से लगी हुयी ीाी उसको खूब भूख लगी हुयी थी आपने कहा इन बेजुबान जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो, उन पर ऐसी हालत में सवारी करो जब वह सवारी के काबिल और सेहत मन्द हें और उन्हें अच्छी हालत में थक कर चूर होने से पहले छोड़ दो। अबू दावूद २५४८

किसी जानवर को भूखा न रखा जाये जिस तरह अपने मातहत काम करने वाले इन्सानों को भूखा रखना गुनाह है इसी तरह जानवरों को भूखा प्यासा रखना गुनाह है और यह क्रूरता इन्सान को जहन्नम में पहुंचा सकती है जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमायाः एक औरत एक बिल्ली की वजह से जहन्नम में डाल दी गयी उसने उसे बांध रखा था न तोउसने उसे खाने को दिया और न आजाद छोड़ा ताकि यह चल फिर कर जमीन के कीड़े मकूड़ों में से कुछ खा लेती। मुस्लिम ६७५

अर्बों की सख्त दिली की हद हो गयी थी कि वह जिन्दा जानवर के शरीर का मनपसन्द हिस्सा काट कर खा लिया करते थे आपने इससे सख्ती से मना किया इस तरीके से कि ''जिन्दा जानवरों का जो गोश्त काट कर खाया जाता है वह मुर्दार है'' (तिर्मिज़ी-१४८०) इसी तरह जानवरों का मुस्ला (उनके शरीर के किसी भाग को काटने से) मना फरमाया और ऐसा करने वाले पर लानत भेजी। (बुखारी ५५१५)

जानवरों को निशाना बाजी के लिये इस्तेमाल न किया जायेः किसी जानवर को निशाना बाज़ी के लिये इस्तेमाल करने या उसे बांध कर निशाना बनाने से इस्लाम ने सख्ती से रोका है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया ''तुम किसी जानवर को हर्गिज़ निशाना न बनाओ एक दूसरी रिवायत में है रसूल स०अ०व० ने जानवरों को बांध कर मारने से मना फरमाया है। (मुस्लिम ५०५७)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बयान करते हैं कि उन्होंने एक बार देखा कि कुछ लड़के मुर्गी को बांध कर तीर से निशाना बना रहे हैं। उन्होंने आगे बढ़कर रस्सी खोली और मुर्गी के साथ उस लड़के को पकड़ कर उसके घर वालों के पास पहुंचे और उनसे कहा अपने बच्चे को इस तरह की बेरहम हरकत से रोको क्योंकि रसूल स०अ०व० ने इस तरीके से किसी भी जानवर या जानदार को निशाना बनाने से मना

किया है। (बुखारी-५५१४)

किसी जानदार के चेहरे पर न मारा जाये और न उसको दागा जाये।

चेहरा शरीर का कमज़ोर और संवेदनशील जगह है इस भाग को मामूली चोट भी बेहद तकलीफ देह होती है। अरब वाले चौपायों के चेहरों पर दाग़ लगाते थे और कभी कभार चेहरों पर मार भी दिया करते थे। अल्लाह के रसूल ने इस क्रूरता को देखा तो सख्ती से रोका।

हज़रत जाबिर फरमाते हैं कि रसूल स०अ०व० ने चेहरे पर मारने और उसे दाग देने से सख्ती से मना किया है। (मुस्लिम ५५५१) हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम स०अ०व० का गुजर एक गदधे के पास से हुआ, जिसके चेहरे को दाग दिया गया था आपने देखा तो फरमाया उस शख्स पर अल्लाह की लानत हो जिसने उसे दागा है। (मुस्लिम ५५५२)

किसी जानवर को आग में न जलाया जायेः एक बार आप स०अ०व० सहाबए किराम के साथ सफर में पड़ाव में थे, आप ज़रूरत के लिये कहीं चले गये थे, जब वापस आये तो देखा कि एक साहब ने अपना चूलहा एक ऐसी जगह जला दिया है जहां जमीन में (या पेड़ पर) चूंटियों का बिल था। यह देख कर आप स०अ०व० ने पूछाः यह चूलहा यहां किसने जलाया है। एक साहब ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैंने। आप स०अ०व० ने फरमायाः इसे बुझाओ, इसे बुझाओ। (अबू दावूद २६७५) मकसद यह था कि इन चूंटियों को दुख न हो और कहीं वह आग से जल न जायें।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद बयान करते हैं कि एक सफर में आपने चूंटियों का एक बिल जिसे हमने जला दिया था, देखकर पूछा यह हरकत किसने की है, हमने जवाब दिया कि हमने यह काम किया है। आप स०अ०व० ने फरमाया किसी जानवर को आग की सजा देने का हक केवल सृष्टिकर्ता (उसके पैदा करने वाले) को है। (बुखारी ३०१६)

जानवरों को एक दूसरे से लड़ाया न जायेः अरबों का एक दिलचस्प काम यह था कि वह जानवरों को आपस में लड़ाते और इस तमाशे से खुश होते थे। इस खेल में जानवर घायल हो कर बेहद तकलीफ उठाते थे। रसूल स०अ०व० ने जब इस अमानवीय काम को देखा तो सख्ती के साथ रोका। (अबू दाऊद २५६२)

इस्लाम में जानवरों के अधिकार के बारे में यह स्पष्ट तालीमात हैं जिनसे यह हकीक़त स्पष्ट हो गयी कि इस्लाम ने जानवरों को कितने सम्मान की निगाह से देखा है। मौलाना सैयद सुलैमान नदवी के अनुसार इन शिक्षाओं से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि इस्लाम के सीने में जो दिल है वह कितना नर्म और कितना रहम व मेहरबानी से भरा हुआ है।

दुनिया को सबसे पहले जानवरों के अधिकार से आगाह करने वाला इस्लाम ही था वर्ना इससे पहले जानवरों के अधिकार की कल्पना ही दुनिया में मौजूद नहीं थी, हो भी कैसे सकता था? जिस दुनिया में मानव अधिकार के लाले पड़े हों वहां जानवरों के अधिकार का तसव्वुर ही असंभव था?

वह लोग जो इस्लाम को खून चूसने वाला मजहब कहते हैं इन शिक्षाओं की रोशनी में जरा दिल थाम कर बतायें कि उनके दावे में कितनी सच्चाई है। इस्लाम ने जानवरों को जो अधिकार दिये हैं क्या सभ्य दुनिया ने इन अधिकारों का पात्र इन्सान को भी समझा है? हालात गवाह हैं कि आज आधुनिक सभ्यता और तथाकथित मानव अधिकार के झण्डावाहकों ने इन्सान की हालत जानवरों से भी बदतर बना रखी है। **(जरीदा तर्जुमान १५-३० जून २०१३)** ❑ ❑ ❑

इस्लाम की खूबियाँ

अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मोताज़

इस्लाम की खूबी यह भी है कि यह तमाम मुसलमानों को आदेश देता है कि वह तमाम ईश्दूतों पैग़म्बरों पर ईमान लाएं उनके बीच अन्तर न करें, उनसे प्रेम करें, इसी तरह से यह हुक्म भी है कि वह तमाम आसमानी किताबों पर भी विश्वास रखें क्योंकि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से पहले जितने पैगम्बर थे वह एक तय समय और एक ख़ास कौम के लिये भेजे गये थे, उनकी क़ौमों ने आसमानी किताबों में रदद व बदल भी कर दिया था लेकिन इस्लाम पूरी दुनिया के लिये आया है। हज़रत मुहम्मद पूरी दुनिया के लिये पैगम्बर (ईश्दूत) बना कर भेजे गये हैं। आप के पैगम्बर बना कर दुनिया में भेजे जाने की ख़बर आप से पहले के पैगम्बरों ने भी दी है लेकिन अब हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के बाद कोई दूसरा नबी या रसूल नहीं आएगा। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''जो शख्स इस्लाम के सिवा और दीन तलाश करे, उसका दीन क़बूल न किया जाएगा और वह आख़िरत में नुक़सान पाने वालों में होगा।'' (सूरे आल इमरान-८५)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''आज मैं (अल्लाह) ने तुम्हारे लिये दीन को कामिल कर दिया और तुम पर अपना इंआम भरपूर कर दिया और तुम्हारे लिये इस्लाम के दीन होने पर रिज़ामन्द हो गया'' (सूरे माइदा-३)

इस्लाम की खूबी यह भी है कि वह अक़ीद-ए-ए तौहीद अर्थात एक अल्लाह की इबादत एवं उपासना की तरफ बुलाता है कि पूरी दुनिया का उपास्य एक है उसका कोई शरीक व साझी नहीं। वही पैदा करने वाला हे, वही रोज़ी देने वाला है, वही सर्वशक्तिमान है, वही ज़िन्दगी देने वाला है वही मौत देने वाला है।

इस्लाम की एक खूबी यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल किया गया कुरआन अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है कुरआन की बातें सत्य हैं कोई भी इन्सान कुरआन के समान नहीं ला सकता यहां तक कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० भी स्वयं अपनी तरफ से कुरआन के समान लाने से क़ासिर हैं। कुरआन ने सच्चाई और शुचिता एवं पवित्रता का आदेश दिया है। न्याय, ईमानदारी यतीमों के साथ अच्छा व्यवहार, मिस्कीनों पर दया व करूणा, बड़ों की इज्ज़त महमान और पड़ोसी की इज्ज़त यह सब कुरआन की पवित्र शिक्षाएं हैं पवित्र चीज़ों से लाभ उठाने का हुक्म दिया है लेकिन बेजा और फुज़ूल ख़र्च से रोका भी है नेकी और परहेज़गारी का हुक्म दिया है, अश्लीलता, बुरी बातों और अत्याचार से रोका है।

इस्लाम सुलह, अम्न व शान्ति और प्यार मुहब्बत की दावत देता है, आपसी झगड़े और गुटबाज़ी से रोकता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''तुम सब अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से

पकड़ लो और फिरक़ा बन्दी न करो'' (सूरे आल इमरान-१०३)

इस्लाम ने अत्याचार से रोका है सबके साथ न्याय का हुक्म दिया है। ख्यानत और धोका देही से मना किया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''बेशक वह ख्यानत करने वाले को पसन्द नहीं करता है''। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और अगर वह सुलेह की तरफ मायल हों तो तुम भी सुलेह की तरफ मायल हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा करो यक़ीनन वह सुनने वाला और जानने वाला है'' (सूरे अंफाल-६१)

इस्लाम ने इन्साफ का हुक्म दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की ख़ातिर हक़ पर क़ाइम हो जाओ, रास्ती और इन्साफ के साथ गवाही देने वाले बन जाओ, किसी कौम की अदावत तुम्हें इन्साफ के खिलाफ न आमादा कर दे। इन्साफ किया करो जो परहेज़ गारी के ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरते रहो यक़ीन मानो कि अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से बाख़बर है'' (सूरे माइदा-८)

इस्लाम ने मआफ करने का आदेश दिया। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और यह कि तुम मआफ कर दिया करो यह तक़्वा के ज़्यादा क़रीब है'' (सूरे बक़रा-२३७)

इस्लाम की खूबी यह भी है कि वह सभी इन्सानों को पवित्र और साफ सुथरा रहने का हुक्म देता है। वह दूसरों के ऐब को छुपाने का हुक्म देता है, बड़ों की इज़्ज़त करने, छोटों पर दया करने और अनाप शनाप बोलने से मना किया है।

इस्लाम ने इस बात से मना किया है कि जब तीन आदमी हों तो एक आदमी को छोड़ कर दो लोग आपस में गुप चुप न करें क्योंकि इससे तीसरे को तकलीफ पहुंचती है। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि जब तुम तीन आदमी हो तो तीसरे को छोड़ कर दो व्यक्ति सरगोशी न करो यहां तक कि तुम लोगों में मिल जाओ क्योंकि इससे उसको (तीसरे व्यक्ति को तकलीफ पहुंचती है।)

इस्लाम ने इस बात से भी मना किया है कि इन्सान बेकार चीज़ों में अपना वक़्त बर्बाद करे। रास्तों में बैठने से रोका है, निगाहों को नीचा रखने का हुक्म दिया है, रास्ते से दुख पहुंचाने वाली चीज़ें को हटाना, मोहताजों की मदद करना, मज़लूम की मदद करना यह सब इस्लाम की खूबियों में से है। बुरे कामों से रोका है भलाई करने का हुक्म दिया है जालिम को अत्याचार से रोकता है, न्याय की शिक्षा दी है। माल, जायदाद और इज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त करने का हुक्म दिया है।

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसने अपने भाई की इज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त की अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उसको जहन्नम से दूर कर दे गा। इसको तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

इस्लाम की खूबी यह भी है कि वह मध्य मार्ग को अपनाने पर जोर देता है और अपने अनुयाइयों को बुराई से दूर रहने और भलाई का हुक्म देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये पैदा किये गये हो, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और

अल्लाह पर ईमान रखते हो। (सूरे आल इमरान-११०)

इस्लाम की खूबियों में से एक खूबी यह भी है कि वह यतीमों (अनाथों) का भरण पोषण करता है और सेवकों को उनका पूरा पूरा अधिकार देता है। गरीबों मोहताजों कमजोरों और पिछड़े लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करेन, उनके साथ नर्मी का मामला करने का हुक्म देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''पस यतीम पर सख्ती न करो और मांगने वालों को डांट डपट न करो''।

इस्लाम की एक खूबी यही भी है कि उसने जानवरों को सज़ा देने और मारने से सख़्ती से रोका है। सहीह मुस्लिम की रिवायत में है कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० का गुजर एक ऐसे गदधे के पास से दुआ जिस का चेहरा दाग दिया गया था आप ने गदधे को देख कर फरमाया अल्लाह की लानत (धिक्कार) हो उस व्यक्ति पर जिसने इस जानवर को दागा है।

इस्लाम की एक खूबी यह है कि वह औरत की इज़्ज़त करने की शिक्षा और उसको पूरा पूरा अधिकार देता है और शौहर पर यह जिम्मेदारी डाली है कि वह अपनी पतनी की आवश्यकताओं का पूरा ख्याल रखे, उसका महर अदा करे, उसको वरासत में हक़ दे, उसके साथ अच्छा व्यवहार करे, उसके साथ न्याय का मामला करो, इस्लाम ने औरत के हर नेक काम का पूरा पूरा बदला देने का वादा किया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ईमान की हालत में मर्द और औरत में से जो भी नेक कर्म करे तो हम ज़रूर पाक़ीज़ा जिन्दगी प्रदान करेंगे और हम उनको उनके अच्छे कर्मों का बदला अवश्य देंगे'' (सूरे नहल-९७)

इस्लाम की नज़र में सबसे अच्छा इन्सान वह है जो औरतों की इज्ज़त करता है, और सबसे बुरा शख्स वह है जो औरत का अपमान करता है।

इस्लाम की खूबी यह भी है कि वह खुराफात को मिटाता है।

जादूगरी, शराब नोशी, सटटे बाज़ी, बेवफाई, झूठ फरेब छल कपट से दूर रहने का आदेश देता है। इस्लाम ने (मुनाफिक) कपटाचारी की पहचान यह बताई है कि जब वह बात कहे तो झूठ बोले, जब वादा करे तो उसको पूरा न करे और जब उसके पास अमानत रखी जाए तो उसमें ख्यानत करे और जब झगड़ा करे तो गाली गुलूच और अनाप शनाप बोले। इसी लिये कुरआन ने इन्सान को वादा निभाने और वचन तोड़ने से बचने का हुक्म दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ऐ ईमान वालो तुम वचन व संधि को पूरा करो'' (सूरे माइदा-१)

इस्लाम अच्छे कर्म की प्रेरणा देता है और सुस्ती व काहिली से बचाता है, कर्म चाहे दुनिया के लिये हो या आखिरत के लिये, इस्लाम इसे इबादत क़रार देता है शर्त यह है कि बन्दे का कर्म अल्लाह की ख़ुशी के लिये हो।

इस्लाम रिश्वत, धोकाधड़ी और फ़ुज़ूल खर्ची से मना करता है। हज़रत मुहम्मद ने फरमायाः अल्लाह ने रिश्वत लेने वाले और देने वाले दोनों पर लानत (धिक्कार) भेजी है और उस दलाल पर भी लनानत भेजी है जो रिश्वत देने और लेने वाले के बीच काम करता है।

नेकी का फल

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक बार रसूल स0अ0व0 ने पिछली उम्मत के तीन आदमियों का एक वाक्या सुनाया। हदीस की किताबों में यह वाक्या इस तरह बयान किया गया है। पिछली उम्मत में तीन आदमी सफर पर निकले थे पनाह लेने के लिये रात बिताने के लिये एक गार (गुफा) में चले गये। रात में चटटान खिसकने की वजह से गुफा का दहाना बन्द हो गया। सुबह जब तीनों उठे तो देखा कि गुफा से निकलने का रास्ता तो बन्द हो गया है। इन तीनों आदमियों ने आपस में कहा कि सब लोग अपने पिछले नेक कर्मों का हवाला देकर अल्लाह से दुआ करें। उनमें से एक मुसाफिर (यात्री) ने कहा कि ऐ अल्लाह तू तो जानता है कि मेरे पास बूढ़े मां बाप थे मैं उनका इतना ख्याल करता था कि मैं उन्हें शाम को सबसे पहले दूध पिलाया करता था, पहले मां बाप को पिलाता था फिर बीवी बच्चों और गुलाम को। एक दिन चारे की तलाश में दूर निकल गया जिसकी वजह से घर पहुंचने में देर हो गयी, मेरे घर पहुंचते पहुंचते मां बाप सो गये थे, मैंने दूध निकाल कर ले जाकर उनके सिरहाने खड़ा रहा मैंने उनको केवल इसलिये नहीं जगाया कि उनकी नींद टूट जाये गी। मैं सुबह तक दूध पिलाने के लिये खड़ा रहा और हमारे बच्चे भूख से बिलकते रहे। जब मेरे मां बाप ने दूध पी लिया फिर अपने बच्चों को पिलाया। ऐ अल्लाह अगर मेरा यह कर्म तेरी खुशी के लिये है तो चटटान को गुफा के दहाने से हटा दे ताकि हम लोगों को इस मुसीबत से छुटकारा मिल जाये। इस के बाद वह चटटान थोड़ी सी खिसक गयी। दूसरे मुसाफिर ने कहा ऐ अल्लाह तू जानता है मेरे चचा की लड़की थी जो मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द थी मैंने उससे शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिये बहलाया फुसलाया लेकिन वह तैयार नहीं हुयी लेकिन एक बार वह और उस का पूरा खानदान अकाल का शिकार हो गया। मदद के लिये मेरे पास आयी। मैंने उसको 120 दीनार इस शर्त पर दिया कि वह मुझे अपने पास अकेले में आने का अवसर देगी। चचा की लड़की मजबूरन तैयार हो गयी। जब मिलने का समय करीब आ गया तो चचा की लड़की ने कहा ऐ अल्लाह के बन्दे अपने रब से डर। ऐ अल्लाह मैं तेरे भय से अवैध सम्बन्ध बनाने से पीछे हट गया। अपनी चचाजाद बहन को जो कुछ भी दिया था उसको वापस भी नहीं लिया। ऐ अल्लाह अगर यह काम मैंने तेरी खुशी के लिये किया है तो इस मुसीबत से हम लोगों को निकाल दे। चटटान फिर थोड़ी से खिसक गयी।

तीसरे मुसाफिर ने कहा कि ऐ अल्लाह तू तो जानता है कि मैंने कुछ मजदूरों को काम पर लगाया था, सबको मजदूरी भी दे दी थी केवल एक मजदूर अपनी मजदूरी नहीं ले सका था। मैंने इस मजदूर की रकम को कारोबार में लगा दिया था उसकी रकम से कारोबार में खूब तरक्की हुयी। एक दिन वह मजदूर आ धमका। उस मजदूर ने अपनी मजदूरी की मांग की मैंने कहा यह ऊंट गाय, बकरियां गुलाम सब तुम्हारे हैं। उस मजदूर ने कहा मुझसे मजाक न करो। मैंने कहा कि यह सब माल तुम्हारी मजदूरी का फल है। वह मजदूर अपने पूरे माल को लेकर चला गया। ऐ अल्लाह अगर यह कर्म मैंने तेरी खुशी के लिये की है तो इस मुसीबत को हटा दे। इसके बाद गुफा से पूरी चटटान हट गयी और तीनों मुसाफिर गुफा से बाहर निकल आये।

अगर हमारे काम में किसी तरह का दिखावा नहीं होगा, जो भी कर्म करेंगे अल्लाह की खुशी के लिये करेंगे तो हमारे अच्छे कर्म मुसीबत में हमारा साथ देंगे।

इसलाहे समाज
जून 2019 27

Posted On 21-22 Every Month
Posted At NDPSO
"Registered with the Registrar
of Newspapers for India"

JUNE 2019
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2017 - 2019

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यो के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढ़लाई का काम हुआ चाहता है और अहले हदीस मंज़िल में तरमीम और निमार्ण का काम तीसरी मंज़िल तक पहुंच चुका है जो अल्लाह के फज्ल व तौफीक के बाद मुहसिनीने जामअत व जमीअत की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये अहबाबे जमाअत सूबाई जमीअतों से तनसीक़ के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें।

जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की खिदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोटः- इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और जिम्मेदारान को सूचना दे दी गयी है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICICOO06292)

28